

'कुछ न करें और खूब कमाएं।'

'भगवान - ईश्वर - प्रभु - खुदा' हम उसे कई नाम से पुकारते हैं, हम सबका एक मालिक, पशु - पक्षी और मनुष्य को इस 'सुंदर धरती' की रक्षा करने भेजता है और उनसे काम कराने की शक्ति देने, 'भगवान' अपने 'प्राकृतिक चक्र' से सभी को 'मुफ्त भोजन और पानी' देता है, इस बात के सबूत है कि पशु - पक्षी को मुफ्त मिलता है, तो फिर इंसान को क्यों नहीं मिलता? मिल रहा है भाई, मगर कुछ गद्दार और धोखेबाज की नीति के कारण मुफ्त नहीं मिलता और जब जीवन के लिए 'भोजन और पानी' नहीं मिलता, तब लोगों को वह पाने मजबूर न गलत काम करने पड़ते हैं।

प्राकृतिक चक्र से 'भोजन और पानी' मुफ्त पाने के लिए श्री सावे ने 1960 में 'जैविक कृषि सिस्टम - OFS' का आविष्कार किया, आज भी केवल जल सिंचाई से 'प्राकृतिक चक्र' से उनका परिवार भरपूर उत्पादन प्राप्त कर रहा है, इस वैज्ञानिक खोज के लिए श्री सावे को कई 'राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार' मिले हैं। श्री सावे OFS को अपनाकर कोई भी व्यक्ति 'करोड़पति' बन सकता है और 'ईश्वर के प्राकृतिक चक्र' से सब कुछ मुफ्त में प्राप्त कर सकता है।

"मानव सेवा ईश्वर की सेवा है", इसलिए हम 'सावे और संघवी' OFS की सारी जानकारी समाज के चरणों में रख रहे हैं, ताकि दुनिया 'भूख, पानी और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या' से छुटकारा पा सके। 'प्राकृतिक गोली' सेक्शन देखें सभी बीमारी से 15 दिनों में राहत पाएं। हमने अब तक सारी जानकारी 'मुफ्त' दी है, लेकिन लूटने के लिए देशद्रोही लोगों ने उसे दबा दी है, जिसकी वजह से समाज की हालत को देखिए। अब सभी समस्या से छुटकारा पाने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा और इस 'नेक काम' के लिए इस कॉपी को आगे बढ़ानी होगी।

'आधुनिक विज्ञान' के नाम पर लूटने के लिए एक सिस्टम तैयार की है, 'पहले 'आधुनिक कृषि सिस्टम - MFS' द्वारा रासायनिक खाद की मदद से अधिक उत्पादन दिखाकर किसानों को फंसाया जाता है। ऐसे जहरीले खाद्य पदार्थ खाने के बाद व्यक्ति को असाध्य रोग होते हैं, उस समय 'आधुनिक उपचार और दवा' के नाम पर वे तेजी से राहत देते हैं और 'दवा के दुष्प्रभाव' के कारण लोग 50 साल से भी कम उम्र में चले जाते हैं!! ऐसी MFS योजनाओं के कारण धरती बंजर हो गई है, दिन-प्रतिदिन 'भूख और पानी' की समस्याएँ बढ़ती हैं, कमाई के गलत तरीकों से MFS ने 'पर्यावरण' को खराब करके, 'ग्लोबल वार्मिंग' का निर्माण किया है, आज लोग 'दया' और भिखारी का जीवन जी रहे हैं। इससे पहले कि सारी समस्याएँ बढ़ जाएँ, 'जागो भाई, जागो' और श्री सावे की सरल OFS द्वारा, सभी समस्याओं से बाहर निकलो।

इस 'सुंदर पृथ्वी' की रक्षा के लिए प्रभु मनुष्य को 'शाकाहारी' के रूप में, खाली हाथ भेजता है और उनके काम में ईमानदारी को देखकर जीवन की अवधि तय करता है। जब खाली हाथ भेजा है, तो 'अन्न-जल' उपलब्ध कराना 'भगवान' का फर्ज है, ताकि सभी पृथ्वी रक्षक को काम करने की शक्ति मिले।

हाँ भाई, हमारी माँग तो सही है, बस इसलिए काम करने की शक्ति देने, पेट भर भोजन और पानी मुफ्त में देने 'ईश्वर' अपना 'प्राकृतिक चक्र' चलाता है और जीवन की सभी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वह 'धरती माता, गौ माता, पर्यावरण और हरी भरी दुनिया' का वह सहारा लेता है। ऐसा शुद्ध भोजन खाने से सभी को काम करने की ऊर्जा मिलती है, नई पीढ़ी का पुनर्निर्माण की शक्ति मिलती है, परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने, नीति नियम से भरपूर धन कमाने की सिस्टम देता है ताकी सभी खुशी से काम करते हुए, जब भी 'ईश्वर' का बुलावा आए तब खाली हाथ लौटना हैं, इसी को जीवन चक्र कहते हैं।

काम करने के लिए हमें शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती है, इसलिए 'भगवान' हमें रोज सुबह खाली पेट जगाता हैं और रात को पेट भर जाने के बाद भोजन को पचाने के लिए वही हमें गहरी नींद देता हैं, ताकि अगली सुबह काम करने के लिए नई ऊर्जा मिले। क्या आपको यह 'प्रभु' की मुफ्त सुविधा मिलती है? अगर नहीं!! 1

तो यह 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप करने के 'बुरे कर्मों की सजा' का कारण है। यदि आप 'खुशियों के साथ स्वस्थ जीवन चाहते हो और 'करोड़पति' बनना चाहते हो', तो 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप करना बंद करो। महोदय, 1960 में हमारे श्री सावे ने जैविक खेती सिस्टम - OFS की खोज की है, जिससे बिना किसी इनपुट लागत और केवल पानी की सिंचाई से हमें सब कुछ मुफ्त मिल रहा है।

जीवन में 'ईश्वर की मुफ्त सिस्टम' का लाभ सभी को क्यों नहीं मिलता? क्योंकि आज किसी को यह रुचि नहीं कि, शास्त्रों में क्या लिखा है? संयुक्त परिवार में रहने के क्या क्या लाभ हैं? पूर्वज 100 वर्षों से अधिक समय तक सुखपूर्वक कैसे जीवन बसर करते थे? जैसे ही हम प्रगति के बारे में पूछते हैं तो, सभी कहते हैं, 'आज तो 'आधुनिक समय' है और 'आधुनिक सिस्टम' के द्वारा ही प्रगति होती है और इसलिए तो पूरे विश्व ने इसे अपनाया है।'

सच्चाई यह है कि 'आधुनिक सिस्टम' की जाल में सभी फसे है', क्योंकि पहले ली हुई कोई भी वस्तु सालो साल उपयोग होती थी और आज कुछ ही महीनों में सिस्टम अपडेट होती है, इसलिए व्यक्ति को वह सीखना पड़ता है और मजबूरन नया सिस्टम खरीदना पड़ता है, जैसे कि मोबाइल, पहले 2G, फिर 3G, 4G और अब 5G!! 'आधुनिक मतलब, पुराना फेंको और नया लो।' यही बात 'आधुनिक शिक्षा' में भी लागू होती है, माता-पिता अपने बच्चों के पीछे भागते हैं और अपनी 'कड़ी मेहनत की कमाई' 'आधुनिक शिक्षा' पर खर्च करके किसी भी तरह, बच्चों को 'मास्टर डिग्री' दिलाते हैं और माता - पिता खुद और शिक्षक बच्चों को 'किताबी कीड़ा' बनाते हैं!! वही 'आधुनिक डिग्री' पाने के बाद, डॉक्टर खुद की बीमारी का इलाज नहीं कर पाता और किसान के बेटे लाभदायक खेती नहीं कर पाते!! ऐसी कागज पर लिखी डिग्री केवल 'नौकरी' (गुलामी) करने के काम आती है। अब तो 'रॉबर्ट्स' तैयार किए हैं, जिसके कारण 'लघु उद्योग' बंद हो गए और दुनिया भर में लाखों लोगों की नौकरी गई, यहाँ तक कि 'मास्टर डिग्रीधारी' भी अपने माता-पिता की देखभाल नहीं कर पाते, इसलिए वे 'वृद्धाश्रम' में जाते हैं, वे बैंक का कर्ज नहीं चुका पाते, इसलिए वे 'महिलाओं की मजदूरी' पर निर्भर रहते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि एक महिला में 'नौ देवियाँ' होती हैं और उसका कर्तव्य परिवार और घर की देखभाल करना है, लेकिन आज के आधुनिक युग में, वह भी असहाय है, काम पर जाने और परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कई तरह के गलत काम करने को मजबूर है। सच तो यह है कि जीवन में आप कोई भी काम करें, लेकिन जीने के लिए सभी को 'निरोगी भोजन' की आवश्यकता होती है, इसलिए खेती के बारे में सोचें, बिना 'कड़ी मेहनत', बिना लागत, केवल पानी और हमारे श्री सावे की सरल OFS द्वारा, नीचे दिए सिस्टम से 'करोड़पति' बनें।

'आधुनिक विज्ञान' की मदद से हम दूसरे ग्रहों पर जा सकते हैं, लेकिन MFS के विज्ञान में एक पुराने बीज से 1,000 नए दाने उगाने की शक्ति नहीं है। हाँ, पहली बार किसान को चार गुना भारी उत्पादन मिला मगर वह धरती माँ का खून चूसकर मिला था और 3 फसलों के बाद, चाहे किसान उर्वरकों पर कितना भी खर्च करें, वही उपज कभी नहीं मिलती। वही उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसान को अधिक से अधिक रासायनिक खाद का उपयोग करना पड़ता है, इसी कारण हजारों एकड़ जमीन बंजर हो गई, आमदनी से खर्च अधिक होने के कारण, कृषि छोड़कर किसान शहर गया और कई ने आत्महत्या की और अभी भी कर रहे हैं।

'वाह भाई वाह', क्या 'आधुनिक विज्ञान और सिस्टम की प्रगति है!! प्रगति होती तो लोग भूख और पानी की कमी से कभी न मरते, 'पर्यावरण' न बिगड़ता, 'ग्लोबल वार्मिंग' खड़ी न होती, आज तक 'आधुनिक सिस्टम के पास इस समस्या का कोई समाधान नहीं है, फिर भी हम उसी को पकड़कर जी रहे है!!'

हम MFS का विरोध नहीं करते, लेकिन 'श्री सावे ने तो हिंदू - जैन OFS खोजी' 2

और वह दोनों मिलाकर, हम ने केवल कम पानी से मेरे 'संघवी फार्म' की बंजर जमीन को उपजाऊ जमीन में बदल कर प्रगति की है। अब MFS द्वारा बंजर बना दी गई कोई भी जमीन OFS के साथ मिलाकर फिर से उपजाऊ कर सकते हैं, जिससे विश्व की भूख -पानी की समस्या दूर होगी। हमारे श्री सावे OFS में 'ग्लोबल वार्मिंग' का भी समाधान है।

सभी जीवों को 'ईश्वर' ने एक पेट दिया है, लेकिन हमारा अनुभव कहता है, 'मनुष्य के पास दो पेट हैं!!' एक तो 'प्राकृतिक पेट' जो खाना खाने के बाद भर जाता है, लेकिन दूसरा पेट मनुष्य ने विकसित किया है, जो कभी नहीं भरता, क्योंकि वह चाहे लालच, छल-कपट और धोखाधड़ी से कितना भी कमा लें, वह पेट कभी नहीं भरता। सभी मनुष्य जीवन का सत्य जानता है कि, अंतिम यात्रा में कमाया हुआ धन साथ नहीं ले जा सकते, फिर भी लगा है कमाने में और शरीर की सारी ऊर्जा खर्च कर देता है, कमजोर होता है, असाध्य रोगों से ग्रस्त होता है और सारा कमाया धन इलाज में खर्च करके भी कुछ हासिल नहीं होता और समय से पहले चला जाता है। 'महोदय, मुझे बताइए कि, ऐसे धन का क्या उपयोग है जो रोग मुक्त जीवन के लिए स्वस्थ रहने निरोगी भोजन नहीं दे सकता?' हमने देखा है, जीवन के अंत में लोग अफसोस करते हैं कि सारा जीवन कमाई में नष्ट हो गया और परिवार के साथ आनंद से रह न पाया। अब हमारी तरह OFS आध्यात्मिक ज्ञान को MSF के साथ मिलाएँ और सब कुछ 'मुफ्त' पाएँ, इसे पाने से पहले 'निरोगी जीवन, धन, सुख और समृद्धि' पाने के चार मार्ग जानले।

जन्म से पहले किसी को भी शहर-स्थान, माता-पिता, भाई-बहन चुनने का कोई विकल्प नहीं मिलता, यह सब पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार मिलता है, इसलिए इसे ईश्वर की इच्छा और पवित्र प्रसाद समझकर स्वीकार करें। जानवर अकेले रहते हैं, इसलिए उनका शिकार होता है, जबकि मनुष्य संयुक्त परिवार में रहते हैं, इसलिए सभी सुरक्षित हैं, परिवार के व्यक्ति को जीवन में पता ही नहीं चलता कि, सुख-दुख कब आया और गया, सभी को जीवन का आनंद यहीं पर मिलता है और व्यक्ति की सभी कमियों के साथ उसका स्वीकार किया जाता है, अच्छे-बुरे समय में सभी एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं, इसलिए व्यक्ति को ईमानदारी के साथ संयुक्त परिवार में रहना चाहिए और देखें कि, धन की वर्षा कैसे होती है और वह पाने के लिए हिंदू शास्त्रों में चार तरीके लिखे हैं, उनका पालन करके कोई भी व्यक्ति 'करोड़पति' बन सकता है, वह भी बिना किसी लागत, अधिक मेहनत और 'प्रकृति चक्र' की मदद से।

मानव अपना जन्म आनंद से बसर कर सके इसलिए पूर्वजों ने कुछ ठोस जानकारी शास्त्र में लिखी थी। उन्होंने देखा था कि, जन्म के बाद, 'मानव' चार चरणों में जीवन बसर करता है, 'कर्म - धर्म - अर्थ और इन सभी से गुजरने के बाद सभी संसार के बंधन तोड़कर मोक्ष को प्राप्त करना। सुखी जीवन जीने के लिए, धन आवश्यक है इसलिए वह पाने के लिए, पूर्वजों ने चार मार्ग दिखाये हैं। सबसे अधिक धन प्राप्त करने का पहला और सबसे आसान और उत्तम मार्ग 'जैविक खेती' कहा है। दूसरा मार्ग 'उद्योग और व्यापार' है, तीसरा निचले दर्जे का कहां है वह है 'नौकरी' (किसी के यहां जाकर गुलामी करना) और 'शेयर बाजार (मेहनत करे कोई और बचे तो वह दान में आप को कुछ धन दे) - दलाली' से धन पाना और चौथा है 'भीख मांगना' आलसी बनकर जीवन बसर करना। फिर से कह रहे हैं, जागो भाई जागो, आज भी हम जीवन में खोया वही आनंद, सुख और धन को पुनः प्राप्त कर सकते हैं जो 'भगवान' शब्द में छिपा है और यह शब्द 'श्री ऋषभदेव' द्वारा दिया गया है जो 'हिंदु राजा थे और जैन धर्म के पहले देव है।' शास्त्रों में दी गई जानकारी के अनुसार यह 'भगवान' शब्द OFS की मदद करता 3

है तथा 'प्राकृतिक चक्र' और 'पर्यावरण' को बनाए रखता है, लेकिन लूट के लिए, **MFS** के लोगो ने, **OFS** की सारी पुरानी ठोस जानकारी के शास्त्रों को ही जला दिया है।

1960 में 'श्री सावे ने वही हिन्दू - जैन की **OFS**' को कई संशोधन कर के खोज निकाला और उन्हे अनेक 'राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार' मिले। हम में एकता नहीं है, इसलिए फिर से वह सारी उपयोगी जानकारी दबा दी। इसका पुख्ता सबूत जब 200 साल राज करने के बाद भी अंग्रेज कृषि प्रधान भारत देश को लूट न पाए, क्योंकि उस समय लोगों के बीच एकता थी, लेकिन कुछ धोखेबाज लोगों की लूट की नीतियों के कारण केवल मात्र 60 साल में ही भारत, पाकिस्तान और कई देश को '**MFS**' से बर्बाद हो गए और आज भी हो रहे हैं।

हिंदू धर्मग्रंथ कहते हैं, खेती ही जीने और आत्मनिर्भर होने का सबसे अच्छा तरीका है, इसलिए हमने 'सावे और संघवी' ने खेती को अपने जीवन के लिए चुना। खेती से हमें 'भगवान' शब्द और 'प्रकृति चक्र' समझ में आ गया और हमें पता चला कि हमारे पूर्वजों ने क्यों कहा था कि खेती ही निरोगी जीवन जीने और 'करोड़पति' बनने का सही मार्ग है। क्योंकि प्रकृति की मदद से, 1 बीज से हमें 1000 नए दाने मिलते हैं, यानी 1/- रुपये के निवेश से, सिर्फ पानी की सिंचाई से, 90 दिनों में 1,000/- रुपये की कमाई होती है। देखिए यह कैसे संभव है?

1960 से हम 'प्राकृतिक चक्र मानदंडों' का पालन करते हुए **OFS** कर रहे हैं और अच्छा मुनाफा भी कमा रहे हैं, जब हमें मुनाफा मिल रहा है तो किसानों को **MFS** से क्यों नहीं मिल रहा? सच तो यह है कि प्रकृति मुफ्त में दे रही है लेकिन लालची स्वभाव के कारण किसान और अधिक चाहता है, इसलिए उन्होंने **MFS** को अपनाया और जब किसानों को 4 गुना उपज मिली तो वे 'धनवान' हो गए और उन्हें लगा कि **MFS** ही खेती की सही सिस्टम है और अब सारी दुनिया जानती है कि, कैसे जमीन बंजर होती है, जहरीले उत्पादन से असाध्य बीमारियां होती हैं और आज **OFS** का ज्ञान कोई स्कूल - कोलेज नहीं पढ़ाते इसलिए किसान **MFS** की जाल में फंसे हैं।

OFS ही क्यों? इसे धार्मिक दृष्टिकोण से समझते हैं। 'अगर जीवन दे नहीं सकते, तो हमें जीवन लेने का भी कोई अधिकार नहीं है।' हिंदू-जैन शास्त्रों में कहा गया है कि, पाप करना (कृत) पाप करने के लिए कहना (करित) और पाप का समर्थन करना (अनुमोदन), यह तीनों ही पाप के भागीदार हैं, ऐसे पाप करके, कोई कितना भी माला जपे, दान दे, गरीबों को मुफ्त का भोजन दे और पापों से मुक्ति पाने का प्रयास करके, 'भगवान' को प्रसन्न करने का प्रयास करें, लेकिन उसे वह 'बुरे कर्मों' की सजा भुगतनी ही पड़ती है। सच तो यह भी है कि, 'प्रभु ने मनुष्य को 100% शाकाहारी बनाकर भेजा है' और 'भगवान' जीने के लिए सब कुछ मुफ्त में दे रहा है, फिर भी कई लोग निर्दोष जीवों की हत्या करके, पेट को कब्रिस्तान समझकर मांस - अंडे खाते हैं, यह भी 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप करने का पाप ही है और इसकी सजा भी भुगतनी पड़ती है।

MFS का समर्थन करने से भी पाप के भागीदार बनते हैं, देखिए हम कैसे पाप के भागीदार बनते हैं और सजा भी भुगतते हैं। **MFS** द्वारा अधिक उपज पाने के लिए किसान खाद और कीटनाशकों का उपयोग करते हैं और लाखों कीटों को मारा, किसान खुद के सबसे अच्छे मित्र केंचुओं को भी मारा, जिससे मिट्टी की और मानव की भी उपजाऊ शक्ति नष्ट हुई, पर्यावरण खराब हुआ, प्राकृतिक चक्र बाधित हुआ और जब हम ऐसे **MFS** का उत्पाद खरीदते हैं, तो जाने-अनजाने में हम **MFS** का समर्थन करते हैं और शास्त्रों के अनुसार हम उस सारे पाप के भागीदार बनते हैं, ऐसे 'कर्मों' की सजा भुगत रहे हैं, घर में शांति नहीं और हर घर में असाध्य बीमारी है। इस **MFS** अपनाते से, भारत की वर्तमान स्थिति देखिये और सजा के तौर पर आज 'दुनिया के सबसे अच्छे कृषि प्रधान देश' को खाद्यान्न आयात करना पड़ रहा है और सरकार की दया - भीख पर जीना पड़ रहा है। 4

लोगों को आत्मनिर्भर बनाने की बजाय, उस देश के लोगों से पाप करवा कर, उस देश की समृद्धि को लूटने का और महा पाप करने का आसान तरीका देखिए। विदेशी लोगों के साथ समझौता करके, नेहरू ने योजना के अनुसार, कृषि कॉलेज में MFS की पढ़ाई शुरू करवाई, इसे किसानों ने जहरीली उपज उगाई और उसे खाने से सभी असाध्य रोग ग्रस्त होने लगे, उस समय 'आधुनिक दवा' दी, इस तरह बिना खून की एक बूँद बहाए लोग आज भी घुट-घुट कर मर रहे हैं और 100 की जगह 50 में शमशान जा रहे हैं। इस तरह 'MFS और आधुनिक दवा' देकर देश की सारी संपदा आज भी उनका परिवार लूट रहा है। पंजाब, अफ्रीका और कई देश इस MFS के पुख्ता सबूत हैं, आज दुनिया के हर घर में MFS खाद्य पदार्थों के कारण कैंसर है और नेहरू के परिवार के बुरे कर्म की सजा सब देख रहे हैं। 'जागो भाई जागो और परिवार और देश को बचाव।'

कई बार हम सोचते हैं, क्या ये MFS योजना तैयार करने वाले और अनुमोदन करने वाले कांग्रेस पार्टी के लोग, क्या वाकई में मूर्ख हैं? क्योंकि वे सच्चाई जानते हैं कि, 'एक दिन सभी को मरना है और खाली हाथ वापस जाना है, तो फिर ये लोग 'बुरे कर्म' क्यों कर रहे हैं, क्यों लूट रहे हैं, धोखा दे रहे हैं और निर्दोष लोगों की हत्या करवा रहे हैं?' संक्षेप में, 'आप जो बोलें हो, वही तो काट ते हो', इसलिए इस खूबसूरत दुनिया को छोड़ने से पहले 'कुछ अच्छे कर्म' करो ताकि दुनिया आपको याद रखे। सच तो यह है कि हम 'सावे और संघवी' अपने श्री सावे OFS के माध्यम से दुनिया के सभी लोगों को 'आत्मनिर्भर' बनाना चाहते हैं, इसीलिए हमने जो 'निरोगी जीवन, सुख और समृद्धि' पाने का मार्ग खोजा है, वह मुफ्त में दे रहे हैं ताकि सभी 'हिंदू - मुस्लिम - ईसाई' अपने मानव जन्म का आनंद लेकर जी सकें।

श्री सावे कहते थे, 'भाई, कुत्ते भी अपना जीवन जीते हैं पर साहब, हम तो इंसान हैं और समझदार हैं जो परिवार और समाज के लिए जीते हैं, इसलिए बीती बातें भूलकर, हमें भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान, प्राकृतिक चक्र, आधुनिक विज्ञान के साथ OFS और MFS से जोड़कर हम तरक्की कर रहे हैं, अगर समाज केवल MFS पर ही अड़े रहे तो यह 'सुंदर धरती' नष्ट हो जाएगी, जो हो रही है। 1960 में श्री सावे को MFS में बहुत बड़ा नुकसान हुआ था, तब उन्हें पता चला कि, भविष्य में 'खाद्य और जल' मिलने में बहुत बुरे दिन आने वाले हैं, इसलिए सभी की रक्षा के लिए उन्होने सारी OFS की खोज समाज के चरणों में रख दी, ताकि सभी वह कृषि कर सकें, इस 'सुंदर हरी दुनिया' की रक्षा हो और सभी खुशी से जीवन जी सकें।

'श्री सावे जैविक कृषि सिस्टम और प्राकृतिक चक्र से, सब कुछ मुफ्त पाएं।'

पहले श्री सावे की OFS को समझो, फिर हो रहे वास्तविक काम देखने खेत पर आए और जानिए कि, कैसे हम सिर्फ सिंचाई और 'प्राकृतिक चक्र की मुफ्त मदद' से सब कुछ मुफ्त में प्राप्त कर रहे हैं। यह बुलाने का कारण यह है कि, किसान समुदाय सपने में भी नहीं सोच सकता कि बहुत कम पानी से भी खेती संभव है और इसमें न तो जुताई की जरूरत है, नाही किसी खाद-कीटनाशक की और नाही घास-फूस को उखाड़ने की जरूरत है। 1960 में स्वर्गीय श्री सावे ने 'प्राकृतिक चक्र' का अवलोकन किया और नए OFS की खोज की, उन्होंने देखा कि खेती का सारा काम मुफ्त में प्रकृति स्वयं करती है, तो मैं क्यों खर्च करूं और तपती धूप में और जानवर की तरह, खेतों में काम क्यों करूं? उस दिन से उन्होंने अपने 'कल्पवृक्ष फार्म' में OFS करना शुरू कर दिया और अभ्यास करके धीरे-धीरे उन्होंने 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप करना बंद कर दिया। 4 से 6 महीने में तैयार होने वाली 'खेत की फसलों' में वे सिर्फ प्राथमिक जुताई करके, बीज बोकर थोड़ी सिंचाई करते थे ताकि पौधे को सिर्फ नमी मिले और बाकी काम उन्होंने 'प्राकृतिक चक्र' पर छोड़ 5

दिया। इस सिस्टम से प्रकृति अपनी इच्छा अनुसार जो भी स्वस्थ रहने निरोगी उत्पादन देती, उसे संतुष्टि के साथ और ईश्वर की प्रसाद समझकर श्री सावे लेते हैं। 'बागवानी फसलों' में वे केवल प्राथमिक जुताई करते थे, पौधे रोपने के लिए गड्डे खोदते थे और केवल थोड़ी सी सिंचाई करते थे, इससे उन्हें दुनिया में सबसे ज्यादा उत्पादन मिलने लगा। आगे उन्होंने देखा कि 'प्राकृतिक चक्र' खुद की तैयार की सृष्टि का ख्याल रखती है और उनके पेड़ - पौधों को हम से पानी तक की उम्मीद नहीं, यह देखकर कुछ वर्षों के बाद उन्होंने 'बागवानी' में सभी जुताई और सिंचाई पूरी तरह से बंद कर दी, इस तरह OFS से वे 'प्राकृतिक कृषि सिस्टम - NFS' की ओर मुड़ गए। 1960 से शुरू होकर आज तक यानी 2025 तक श्री सावे का परिवार निरोगी उत्पादन और भरपूर मुनाफा लेकर, खुशहाल जीवन जी रहा है। जब श्री सावे 'आधुनिक कृषि सिस्टम -MFS' से खेती कर रहे थे, तो ऐसा क्या चमत्कार हुआ कि, श्री सावे ने 'जैविक कृषि सिस्टम - OFS को पूर्ण अपना ली।

1957 में श्री सावे ने MFS शुरुआत की थी। पहले 3 साल में उन्हें अच्छी उपज मिली, वे 'रासायनिक उर्वरकों के एजेंट' बन गए और खूब कमाने लगे, इस तरह श्री सावे MFS के जाल में फंस गए। 3 साल बाद उनकी आय और उत्पादन घटने लगा, 100/- रुपये की आय के मुकाबले खर्च 80/- रुपये हो गया और कभी-कभी 20/- रुपये का मुनाफा होता। एक बार जब उन्हें भारी घाटा हुआ, तब उन्हें MFS की गोरों की लूट की योजना समझ में आई। उन्होंने देखा कि जमीन में कोई समस्या नहीं, लेकिन उनके घाटे का कारण MFS था जिसमें इनपुट और मजदूरी की लागत बढ़ गई थी, उपज कम हो गई थी और मिट्टी अपनी उर्वरता खो रही थी।

1960 में श्री सावे को 'जियो और जीने दो' का प्राकृतिक चक्र समझ में आया। जंगलों की वृद्धि देखकर उन्हें अहसास हुआ कि पेड़ों की जड़ें बहुत अच्छी तरह फैली हुई हैं, जुताई, खाद, पानी, फसल सुरक्षा और निराई-गुड़ाई की कोई जरूरत नहीं है, केवल प्रकृति की मदद से ये सभी पौधे बढ़ रहे हैं। वास्तव में 'ग्रीन वर्ल्ड' ही आत्मनिर्भर है, उन्हें हमारी तरफ से किसी सहारे, यहां तक कि पानी की भी जरूरत नहीं। इस तरह श्री सावे को साक्षात 'भगवान' के दर्शन हुए और उन्हें MFS अपनाने की अपनी गलती का एहसास हुआ। श्री सावे को समझ में आया कि, 'प्रकृति चक्र' अपनी रचना का ध्यान रखती है, जब तक मनुष्य उसके काम में हस्तक्षेप नहीं करता, तब तक 'दैवीय शक्ति' सभी को सुखी जीवन जीने के लिए 'भोजन और पानी' निःशुल्क प्रदान कर रही है।

1960 में 'विश्व में पहली बार' 'प्राकृतिक चक्र' की सहायता से श्री सावे ने 'जैविक खेती' शुरू की तथा 'जियो और जीने दो' पद्धति को अपनाया। नए प्रयोगों में उनकी आय Rs.100/- की जगह केवल Rs.50/- हुई, परंतु मुनाफा अधिक हुआ!! श्री सावे ने केवल सिंचाई की और 'प्राकृतिक चक्र' में कोई हस्तक्षेप नहीं किया, इसे उनका खर्च मात्र 10/- रुपये हुआ और मुनाफा 40/- रुपये और निरोगी उपज प्राप्त हुई। इस परिणाम को देखकर एक अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकता है कि, क्या उसे MFS रसायनों का उपयोग करके केवल जहरीला और दिखावटी अधिक उपज चाहिए, जो रोग - बीमारी देती हो, या उसे जैविक खेती से स्वस्थ रहने वाला निरोगी उपज, कृषि के सभी लाभ और भरपूर मुनाफा चाहिए?' जी हाँ, श्री सावे का उत्पादन तथा आमदनी 50% कम हुई, परंतु आश्चर्यजनक रूप से 'मुनाफा 300% बढ़ गया!!' तथ्य यह है कि MFS धरती माता का खून चूसता और उसे अधिक जहरीला उत्पादन देता है, भूमि को बंजर बनाता है तथा अधिक मुनाफा नहीं मिलता। जब यह भ्रम टूटा तथा सच्चाई उजागर हुई तो MFS से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए श्री सावे ने अनेक नये प्रयोग शुरू किये तथा OFS की कम लागत वाली नई खोज शुरू की।

'प्राकृतिक चक्र' की सिस्टम जानने के लिए एक बार खेत की मिट्टी को चखकर देखिए, क्या 6

आपको कोई स्वाद मिलेगा? जी नहीं, फिर भी 'प्राकृतिक चक्र' हमें मीठे-खट्टे फल, अनाज, सब्जियां और कड़वे पत्ते देता है!! ये उत्पादन देने में प्रकृति 'हरित संसार के पेड़ - पौधों' की मदद लेता है। एक बात समझनी जरूरी है कि जीवन केवल इस धरती पर ही है और इसलिए हमें 'धरती माता' की रक्षा और सेवा करने भेजा हैं, 'ईश्वर' से 'मुफ्त पवित्र प्रसाद' लेकर जीवन का आनंद लें, यह जानने की गहराई में न जाएँ कि 'प्राकृतिक चक्र' हमें यह भोजन और पानी कैसे देता है?' हम इसलिए बार-बार कह रहे हैं, 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप न करें।

कई वैज्ञानिकों को MSF की गलत पढ़ाई के कारण बार बार 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप करने की आदत है। वे यह खोजने का प्रयास करते हैं कि प्रकृति ने पानी का पम्प कहाँ लगाया है? जिससे 40 फीट ऊपर नारियलों में मीठा पानी भरता है? आज तक किसान खेतों से लाखों टन उपज ली हैं लेकिन आज तक खेत की जमीन में गड्डे नहीं बने!! यह जमीन बार-बार उपजाऊ कैसे होती है भाई? काफी शोध के बाद वैज्ञानिकों ने 12 मुख्य क्षार में से 3 NPK रसायन खोज निकाले और केवल वही देकर 4 गुना उत्पादन दिखाकर, किसान को जाल में फंसा दिया और फिर भारी लूट शुरू हो गई। आज भी अधिक उत्पादन और लाभ पाने के लिए 'भारत, विश्व का सर्वश्रेष्ठ कृषि देश' और कई देश अभी भी इस भ्रम में फंसे हुए हैं कि उन्हें अधिक उपज और लाभ मिलेगा, यही कारण है कि ऐसे खोज में दिन-प्रतिदिन भुखमरी और पानी की समस्या बढ़ रही है।

वर्षों के प्रत्यक्ष कार्य, निरीक्षण, अनेक प्रयोगों, कुछ MFS तकनीका उपयोग, तथा नई सिंचाई सिस्टम की खोज के माध्यम से श्री सावे ने सराहनीय सफलता प्राप्त की है। यह सब खोज विश्व में पहली बार हुई है, इसलिए 'श्री सावे को अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।' अब हमें श्री सावे की जैविक खेती सिस्टम से 'पौष्टिक बंपर उत्पादन', जो किसी भी बीमारी को ठीक करने में उपयोगी है. साथ में भरपूर मुनाफा, 'स्वच्छ वातावरण' मिलता है और इसी में है 'ग्लोबल वार्मिंग का समाधान'। यह सारी सफलता केवल पानी की नमी, कम मेहनत, बिना किसी कॉलेज की MFS की गलत पढ़ाई से संभव नहीं है, इसलिए सही शिक्षा के लिए श्री सावे कहते थे, 'मेरा स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय ही मेरा खेत है', जहाँ वास्तविक 'जैविक खेती' के काम करके मैंने सीखा कि, थोड़ी सी सिंचाई से ही वनस्पतियाँ पनपती हैं और ईश्वर हमें हमारे इस 'पुण्य कार्य' के लिए प्रचुर मात्रा में उपज देता है।

स्वर्गीय श्री सावे एक छोटे किसान थे, लेकिन बिना किसी लालच और अपेक्षा के उन्होंने अपनी पूरी 'OFS की खोज और प्राकृतिक चक्र के वैज्ञानिक सिद्धांतों के रहस्य' को साझा किया है। सबसे पहले श्री सावे ने OFS से शुरुआत की और सफलता मिलने के बाद उन्होंने NFS यानी 'कुछ न करें और खूब कमाएं' की ओर रुख किया। श्री सावे ने खोजा कि, कोई भी प्रकार से खेती करो वह पांच मूल सिद्धांत से होती है और 'भगवान' अपने 'प्राकृतिक चक्रों' के जरिए वह सब मुफ्त में करते हैं। वह OFS के पाँच मूल सिद्धांतों और MFS द्वारा किसानों को कहाँ-कहाँ धोखा और ठगते हैं वह जान लो और सारी OFS लागत बचाने और आसान से कृषि को समझने के लिए कुछ तुलना करने, महत्वपूर्ण जानकारी दी है।

1. जुताई: प्राथमिक जुताई के बाद, अन्य जुताई केंचुओं और अन्य सूक्ष्म जीवों द्वारा की जाती है। पूरे जीवन चक्र के दौरान 'केंचुआ' सुरंग की तरह लाखों छेद बनाते हैं। हर बार एक केंचुआ को अपनी 'प्राकृतिक मल त्याग ने की सिस्टम' के लिए, मिट्टी से ऊपर आना पड़ता है। ऊपर आते और वापस मिट्टी में जाते समय हर 7

बार एक केंचुआ 2 नए छेद बनाता है। श्री सावे ने देखा कि OFS में एक एकड़ जमीन में 4 से 6 लाख केंचुए मिलते हैं, अपनी प्राकृतिक मल त्याग ने की सिस्टम द्वारा, केंचुआ एक दिन में औसतन 10 बार ऊपर आता है और वापस मिट्टी में जाता है और खेत की मिट्टी में 20 छेद करता है, इस प्रकार एक दिन में 4 लाख X 20 छेद = एक दिन में 80 लाख छेद होते हैं, इसलिए इस सिस्टम से भूमि की जुताई का काम केंचुओं द्वारा किया जाता है इसलिए जमीन को जोतने की आवश्यकता मुझे नहीं और उन छिद्रों के माध्यम से जड़ों को ताज़ी हवा मिलती है और बरसात के मौसम में पानी आसानी से मिट्टी में समा जाता है, जो भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद करता है। यही कारण है कि, 'केंचुओं को किसानों का सबसे अच्छा दोस्त कहा जाता है', क्योंकि वे मुफ्त जुताई, खाद प्रदान करने और जल स्तर बढ़ाने में मदद करने की अपनी सुंदर सिस्टम के लिए जाने जाते हैं। केंचुए ट्रैक्टरों से बेहतर काम करते हैं क्योंकि ट्रैक्टर तेल खाता है, पर्यावरण को प्रदूषित करता है और ट्रैक्टरों के भारी वजन के कारण खेत की नरम मिट्टी दबती है, जिससे जड़ों का विकास और फैलाव रुकता है।

हम जो नमक रोज खाते हैं, अगर वो हमारे मुफ्त में काम करने वाले दोस्तों के शरीर पर गिर जाए तो केंचुआ वहीं मर जाता है, अब सोचिए MFS में जब किसान रासायनिक खाद का इस्तेमाल करते हैं तो केंचुओं का क्या होता होगा? यही पाप की सजा के कारण खर्च होता है और बार बार किसानों को खेत जोतने पड़ते हैं, पौधों के लिए खाद खरीदनी पड़ती है और नुकसान उठाना पड़ता है। अब आपको केंचुओं के फायदे पता चल गए हैं तो उन्हें कभी मत खरीदिए, क्योंकि खेत की मिट्टी में रसायन होते हैं इसलिए वह मर जाते हैं और सच्चाई ये है कि जब मिट्टी उसके अनुकूल हो जाती है तो प्रकृति केंचुओं को मुफ्त में ही भेजती है।

इस बात का पुख्ता प्रमाण, प्राथमिक जुताई के बाद आज तक श्री सावे ने जमीन पर कोई जुताई नहीं की और जंगल की तरह उनके पेड़ भी उपज दे रहे हैं। इन केंचुओं की दया को स्वीकार करने के बजाय, अपने लालच के लिए MFS द्वारा रासायनिक खाद का प्रयोग करके, किसान ही दोस्त का गला घोटता है।

2. खाद: हमें पता होना चाहिए कि खाद किसे कहते हैं? श्री सावे ने एक सरल वैज्ञानिक सिस्टम खोजी है, जो सही खाद के बारे में जानकारी देता है। प्रयोग के लिए एक गड्ढा खोदे और उसमें प्लास्टिक, कांच, रबर, लोहे का टुकड़ा और साथ में पशु की लाश डालें और मिट्टी से बंद कर दें। 6 महीने बाद सारी वस्तु गड्ढे से बाहर निकाले, मिट्टी में केवल लोहे का टुकड़ा और लाशें सड़ने लगती हैं, जहाँ अन्य आधुनिक विज्ञान की मदद से तैयार किए हैं वह उसी स्थिति में रहते हैं। संक्षेप में, पाँच तत्वों के 'प्राकृतिक चक्र' द्वारा तैयार की हुई कोई भी चीज़ मिट्टी में विघटित होती है वह 'खेती के लिए खाद' है। एक स्वस्थ शरीर के लिए हमें 12 क्षार-नमक चाहिए जो हमें OFS से मिलते हैं और MFS से हमें केवल 3 NPK मिलते हैं और वे भी जहरीले होते हैं, बाकी 9 क्षार, कुछ मात्रा में 'पेड़ - पौधे' पानी और पर्यावरण से लेकर फल में पारित करते हैं। MFS रासायनिक के केवल 3 NPK खादों से, वैज्ञानिक अधिक उत्पादन दिखाते हैं, अगर रासायनिक खाद से उपज मिलती होती तो फिर, MFS में गोबर का उपयोग क्यों करके को कहते हैं? अब तक तो सारा विश्व यह MFS को जान चुका है।

OFS में खाद पाने के लिए हम बिना जुताई के ही पौधों के तने और पेड़ों की जड़ों के आसपास सूखी पत्तियां, गोबर और हरी घरेलू सब्जियों का कचरा डालते हैं। श्री सावे OFS में हम इसे 'बुफ़े सिस्टम' कहते हैं। किसान के सबसे अच्छे केंचुआ दोस्त उस कचरे को 'उत्तम जैविक खाद' में बदल देते हैं। जब केंचुए मुफ्त में खाद दे रहे हैं तो भाई, हम जैविक खाद के नाम पर बिकने वाली खाद खरीद कर अपनी मूर्खता क्यों दिखाएं?

गोरे लोगों के पास MFS माल बेचने की योजना है, 'पहले वे खरीदार को अपने उत्पाद के लिए मनाने 8

की भारी कोशिश करते हैं और अगर वे नहीं खरीदते हैं, तो वे लोगों को भ्रमित और गुमराह करते हैं।' हमने देखा है कि कंपनियां **MFS** माल आयात करते हैं, कुछ खुद तैयार करते हैं और उन्हें बेचने के लिए वे डीलर नियुक्त करते हैं। सभी को भरपूर मुनाफा चाहिए, इसलिए सेमिनार में जुठ - मुठ का दिखावा करने, जीनके पास कृषि की जमीन नहीं, आज तक कोई फसल नहीं उगाई जैसे खुद के नियुक्त लोगों को **'जैविक खेती के पुरस्कार देते हैं।'** यह देखकर किसान फंसते हैं। सच तो यह है कि इन **'पुरस्कार विजेताओं और प्रमाणन एजेंसियों को OFS की ABCD का भी पता नहीं!!'** यह **OFS** पुरस्कार विजेता किसानों से कहता है, अगर आपको अपना **'जैविक उत्पाद ऊंचे दामों पर बेचना है'**, तो आपको **'जैविक खाद्य प्रमाणपत्र'** की जरूरत है और उसके लिए आपको **'जैविक खेती'** करनी होगी। लोभी किसान को यह ठग लोग, केंचुआ की खाद पाने के लिए बड़े-बड़े टैंक बनवाते हैं।

किसान भारी लागत से टैंक बांधते हैं, उसमें कचरा भरने की मजदूरी देते हैं, फिर तैयार हुआ टैंक से वर्मीकंपोस्टिंग निकालने की मजदूरी देते हैं। इतना खर्च करके भी किसान को **OFS** में कोई भी अधिक कमाई नहीं होती, क्योंकि टैंक से वर्मीकंपोस्टिंग निकालने में उपयोगी प्राकृतिक गैस वाष्पित होता है, उसे **'पेड़ - पौधों'** तक ले जाने और खिलाने के वहां रखने की मजदूरी देनी पड़ती है, फिर भी किसान अपना जैविक उत्पाद बेच नहीं पाते!! क्योंकि ऐसे जैविक उत्पाद बेचने के वक्त पुराने MFS के कुछ पुराने रासायनिक खाद के तत्व मिलते हैं, इसलिए किसान उसे बेच नहीं पाते। **संक्षेप में कहें तो 'जैविक खाद्य प्रमाण पत्र' की पूरी लागत का नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। जब किसानों को OFS में लाभ नहीं मिलता, तो वे वापस MFS की ओर मुड़ते हैं। बस यही तो है MFS का माल बेचने वालों की योजना है, ताकि कोई भी किसान इनके जाल से निकल न सके।**

आगे आपने जाना कि, श्री सावे OFS में **'पेड़ - पौधों'** को खाना देने के लिए **'बुफ़े सिस्टम है।'** केंचुआ खाना तैयार करके चुपचाप खड़े **'पेड़ - पौधों'** को सीधे जड़ों के मुंह में भोजन रखते हैं, **'विश्व की कोई भी सिस्टम यह कार्य नहीं कर सकती'**, इस सिस्टम से किसानों को बिना किसी खर्च के भरपूर उपज और मुनाफा मिलता है। सिर्फ 4 महीने में एक नया प्रयोग करके, हम MFS के चंगुल से बाहर आ गए हैं और **'संघवी फार्म'** की बंजर जमीन से सबसे समृद्ध और अधिक जैविक उपज प्राप्त की है।

3. जल: श्री. सावे ने अध्ययन किया कि इस **'सुंदर पृथ्वी'** पर हमारे पास 100% जल है, समुद्र में 95% जल खारा है, 3% जल बर्फ के रूप में संग्रहित है, 2% जल भूमिगत संग्रहित है तथा हम केवल 1% जल पर जीवित हैं, इसलिए हमें इसका उपयोग बहुत सावधानी से करना चाहिए

श्री सावे ने खोजा कि, जड़े 'पेड़ - पौधों' का मुंह, नाक और आधार स्तंभ है और वहां जल सिंचाई करने से जड़ों का दम घुटता है और इसे पेड़-पौधे बहुत कमजोर होते हैं, उन पर फल देने के लिए फूल तो जरूर खिलते हैं जरा सा फल भी निकलते हैं मगर उनका विकास होकर बड़े होने से पहले ही गिर जाते हैं, जिसे हम 'गर्भपात' कहते हैं। यह देखकर श्री सावे ने विश्व की एक नई 'प्लेटफॉर्म और ट्रेच सिंचाई सिस्टम' और **'क्रोटन प्लांट' की खोज की। 'क्रोटन प्लांट' से जानकारी प्राप्त होने के बाद, अब हम 12 से 15 फीट की दूरी से पानी सिंचाई करते हैं, जिससे हमारा 80% पानी बच गया, बिना किसी लागत के हमारा भूजल स्तर बढ़ गया, इस सिस्टम से हमारे पेड़ कभी फल नहीं छोड़ते हैं और हमारा उत्पादन बढ़ गया है, क्योंकि OFS में पेड़-पौधों को पानी की जरूरत नहीं होती बल्कि उन्हें केवल नमी की जरूरत होती है। 'जंगल के पेड़ अपने आप जीवित रहते हैं और कोई भी सिंचाई नहीं करता' फिर भी फल देते हैं, यह देखने के बाद, 9**

श्री सावे ने 'प्राकृतिक खेती सिस्टम - NFS' को अपनाई, मतलब कि, कृषि के पांचो मुल सिस्टम बंध।

1960 में श्री सावे के कुएं का पानी 30 फीट था, जबकि आस-पास के किसान जो MFS कर रहे थे, उनके कुएं का जलस्तर 150 फीट तक गिर गया और कई सूख गए और आज उन्हें जीने के लिए भी पर्याप्त पानी नहीं मिलता। अब देखिए श्री सावे अपने OFS से कितना पानी बचा रहे हैं।

जब श्री सावे MFS कर रहे थे, तब वे नारियल-चीकू-आम के हर पेड़ पर प्रतिदिन 140 से 150 लीटर पानी का उपयोग करते थे। फिर उन्होंने भारी खर्च करके 'ड्रिप इरिगेशन सिस्टम' खरीदा और पानी की ज़रूरत 70 से 80 लीटर हो गया था, लेकिन इस सिस्टम के रख-रखाव और मरम्मत का खर्च बहुत बढ़ गया और इसे चलाने के लिए लगातार बिजली की ज़रूरत पड़ती थी, जो खेती में कभी संभव नहीं। फिर श्री सावे ने 'प्लेटफॉर्म और ट्रेंच इरिगेशन सिस्टम' और 'क्रोटन प्लांट' का आविष्कार किया और पानी की ज़रूरत 10 से 15 लीटर हो गई।

श्री सावे ने मेरे संघवी फार्म में 'सूर्य मंडल के 12 ग्रह, 12 राशी चक्र और 12 महिने' का आधार लेकर प्रयोग से साबित करके दिखाया कि वायुमंडल से पानी खींचकर, रेगिस्तान में भी खेती संभव है और एक नारियल का पेड़ सिर्फ 1 लीटर पानी से फल देने के लिए भी सक्षम है।

4. फसल सुरक्षा: जब एक लड़का - लड़की जवान बनते हैं, तो वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और प्यार में पड़ते हैं। इसी तरह, पेड़-पौधों पर फल आने से पहले, 'अमृत-शहद' निकलता है, तो कई शाकाहारी और मांसाहारी जीव - जंतु, कीड़े-मकोड़े मीठे रस को चूसने के लिए आते हैं जो एक 'प्राकृतिक क्रिया' है जिसे 'परागण की प्रक्रिया' शुरू होती है। दुनिया की कोई भी ताकत इस 'प्राकृतिक सिस्टम' को रोक नहीं सकती। इस 'प्राकृतिक चक्र और नियम' को समझे बिना हम इंसान क्या करते हैं? जब बच्चे प्यार में पड़ते हैं, तो माता-पिता बच्चों को सज़ा देते हैं और किसान कीटनाशक छिड़ककर 'नए उत्पाद बनाने के प्राकृतिक चक्र के 'पवित्र कामकाज' में हस्तक्षेप करते हैं।' किसान उपयोगी और फसल खाने वाले सभी बैक्टीरिया, जीव - जंतु, पक्षी, आदि को मार देते हैं। जैसा कि मैंने कहा, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हम सभी इंसान पाप के भागीदार बनते हैं। सभी 'पवित्र शास्त्र' कहते हैं कि 'हम इस धरती के रक्षक हैं, हमारा कर्तव्य धरती की रक्षा करना है, हम 'प्राकृतिक खजाने को लूटने' के लिए हमें जन्म नहीं दिया, इसलिए भाई 'जियो और दूसरों को भी जीने दो', क्योंकि जब हम जीवन दे नहीं सकते, तो हमें किसी का जीवन लेने और मारने का कोई अधिकार नहीं। सच तो यह है कि यह विभाग ब्रह्मा, विष्णु और शंकर (तीन भगवान - ब्रह्मा ॐ जनरेटर - विष्णु ॐ ऑपरेटर - शंकर ॐ डिस्ट्रॉय - G O D) का है, इसलिए उनके विभाग में हस्तक्षेप न करें।

'प्रकृति की अपनी फसल रक्षा की वैज्ञानिक सिस्टम है, लोग समझ नहीं सकते और इसलिए कीटक फसल खाते हैं और किसान को नुकसान होता है।' अब MFS की लूट का पुख्ता सबूत देखिए। हमने किसान से पूछा कि भाई आपने फसल सुरक्षा के लिए सबसे महंगा कीटनाशक खरीदा और उसे नियंत्रित करने के लिए पेड़-पौधों पर उसका छिड़काव किया, क्या उससे कीट नियंत्रित हुए और फसल सुरक्षित रहती है? निराश इंसान कहता है, 'हमारी मेहनत की कमाई कीटनाशक खरीदने में खर्च होती है और छिड़काव के कारण हमें कई बीमारियां होती हैं, खेत की उपज भी जहरीली होती है और हम सालों से देखते आ रहे हैं कि दवा छिड़कने के बाद लाखों कीट मरते हैं, लेकिन आज तक न तो हम और ना ही MSF के विशेषज्ञ यह समझ पाए हैं कि कुछ ही दिनों में ये कीट कैसे बढ़ते हैं? कई बार तो कीटों के कारण हमारी पूरी फसल ही नष्ट होती है!!'

फसलों की सुरक्षा के लिए हम कीटों को फसलों से दूर रखने के लिए जैविक दवा का उपयोग 10

करते हैं।' हम 'गाय के मूत्र' में नीम, तुलसी के पत्ते और कई अन्य जहरीले पौधे डालते हैं और उसे 10 दिनों तक सड़ने देते हैं, फिर एक कपड़ा रखकर छान लेते हैं और जो घोल प्राप्त होता है उसे स्प्रे पंप में डालते हैं, 1 भाग घोल और 9 भाग सादा पानी मिलाते हैं, और कीटों को नियंत्रित करने के लिए फसलों पर स्प्रे करते हैं, 15 दिनों तक प्रतीक्षा करते हैं। इस घोल से कीटाणु मरते नहीं हैं, लेकिन कीट कम होते हैं और हमारी फसलें इस 'प्राकृतिक वैज्ञानिक सिस्टम' से नियंत्रित होती हैं। कीटाणु कैसे नियंत्रित होते हैं? यह वैज्ञानिक खोज श्री सावे ने की थी, जो मेरी पुस्तक में लिखी है। लेकिन हम फिर से कह रहे हैं, 'भाई गहराई में मत जाओ, 'भगवान' द्वारा दिया गया मुफ्त भोजन खाओ और कृपया प्रकृति के काम में हस्तक्षेप मत करो।'

श्री सावे ने आगे खोजा कि और कहा 'जैविक दवा घोल' का छिड़काव आवश्यक हो तो ही करें, क्योंकि 'प्राकृतिक चक्र की खुद की फसल सुरक्षा सिस्टम है' और वह काम के लिए प्रकृति ने लाल चीटियां, मकड़ी, मेंढक व अन्य अनेक जीव-जंतु का निर्माण किया है, यह फसल रक्षक जीव, एक दिन में अपने वजन से अधिक कीट खा जाते हैं, इसी प्रकार उल्लू जैसे अनेक मांसाहारी पशु-पक्षी शिकार कर अपना कर्तव्य निभाते हैं। जब सारा काम मुफ्त में होता है, तो MSF कीटनाशक दवा खरीद कर अपनी मूर्खता क्यों दिखाएं? इसके छिड़काव से फसल खाने वाले कीट के साथ-साथ उपयोगी फसल रक्षक कीट भी मरते हैं और बाद में फसल खाने वाले कीट की संख्या ही बढ़ती है। फिर कितना भी प्रयास किया जाए, कीट नियंत्रण में नहीं आते और ना ही फसल सुरक्षित रहती है।

फसल सुरक्षा पर होने वाले खर्च की बचत हेतु सलाह है कि, **OFS** के नाम पर कई लोग पेस्ट कंट्रोल तैयार घोल बेचते हैं, उन्हें न खरीदें, क्योंकि जब ये सभी सामग्रियां प्रकृति से मुफ्त में उपलब्ध हैं, तो वह लेकर मूर्खता क्यों बनते हो, क्योंकि घोल बेचने वाला दुकानदार भी तो प्रकृति से मुफ्त में लेता है और वह प्राकृतिक घोल कैसे तैयार करें? वह जानकारी ऊपर लिखी है। अभी तक **MFS** में किसानों को भारी घाटा हुआ है और आप निर्दोष जीव को मारने का गलत कर्म कर चुके हो, इसलिए ऐसे **MFS** को छोड़ देने में ही समझदारी है। एक वैज्ञानिक तरीका से किसान फिर से वही फसल रक्षकों को अपने खेतों में बुला सकते हैं और वह अपने आप आते हैं।

5. खरपतवार और घास: 'घास यह प्रकृति का एक बड़ा वरदान है।' प्राकृतिक रूप से उगने वाली घास में वातावरण को ठंडा रखने, मिट्टी में नाइट्रोजन और आवश्यक पोषक तत्वों को संग्रहीत करने की अनोखी क्षमता होती है, जिसे अन्य पौधों को लाभ मिलता है, घास 'धरती माता' की रक्षा करती है और चिलचिलाती गर्मी से 'वस्त्र' के रूप में काम आती है, मुख्य फसल की वृद्धि में मदद करती है और पानी को वाष्पित होने से रोकती है। जब घास की लंबाई फसल से अधिक होती है तो ही हम इसे उखाड़े बीना, जमीन से करीब 1-2 इंच छोड़कर, ऊपर से हम काटते हैं और वहीं पर दबाते हैं या फिर, उसे पशुओं के चारे के लिए उपयोग करते हैं। इसे गाय माता से हमें दूध और परिवहन के लिए बैल मिलते हैं और इन दोनों से हमें फसल सुरक्षा के लिए जैविक खाद, गोमूत्र मिलता है और यह सब, कृषि के लिए हमें मुफ्त मिलता है, इसलिए हमारे 'हिंदू शास्त्र' में 'गाय को माता है और पशु को हमारा धन कहाँ है।' अब हमारी मूर्खता देखिए, हम खुद को कहते 'हिंदू' और हम खुद ही अपनी 'गाय माता' और अन्य पशुओं को, कसाई को बेच देते हैं !! वाह भाई वाह क्या 'हिंदू राष्ट्र' की प्रगति हो रही है। भाई यह घास को दुश्मन और उसे उखाड़ने की यह सिस्टम आई कहां से?

आज तक किसान और **MFS** सलाहकार समझ नहीं पाए हैं कि, घास को उखाड़ा, जलाया, उस पर तेजाब डाला, भारी ट्रैक्टरों से कुचला और मिट्टी में गाड़ देने के बावजूद, वह जंगली घास, फसल से भी 11

ज्यादा तेजी से उगती है!! क्यों भाई क्यों, किसान घास को नष्ट क्यों नहीं कर पाते? ज्यादा कोशिश करने पर खेतों में एक जंगली किस्म की घास उगती है और उसका नाम है 'कांग्रेस घास', जो कभी नष्ट नहीं होती।

जीवन की सच्चाई, जीने के लिए सबको 'निरोगी भोजन चाहिए', लेकिन MFS में पशु समान काम करने को कोई तैयार नहीं है, इसलिए किसान गांव छोड़कर शहर भाग रहा है, इसे रोकना है तो, सरल, बीन लागत की आरामदायक श्री सावे की OFS दिखाई जाए तो, बिना कुछ किए सभी 'करोड़पति' बनना चाहेंगे।

पशु समान जीवन से बाहर निकलने सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि घास उगती है क्यों? जो किसान घास को दुश्मन मानते हैं वह बताए, क्या आपको लगता है कि 'भगवान' मूर्ख है जो बार-बार घास को जन्म दे रहा है?' MFS की लूट से बचने आंख के साथ देखने की दृष्टि भी होनी चाहिए, अब खेत आपका, MFS से खेती आप करते हो इसलिए वही दृष्टि से देखकर बताइए, क्या आप के खेतों में यह होता है?

MFS द्वारा किसान नई फसल शुरू करने से पहले पुरानी फसल के सभी अवशेष हर तरह से नष्ट करके, नई फसल की शुरुआत करता है। बीज के साथ फसल की वृद्धि के लिए किसान कुछ खाद का उपयोग फसल के विकास के लिए डालता है और फिर सिंचाई करता है, इस तरह सब कार्य हो जाने के बाद अब सबसे महत्वपूर्ण बात को देखिए। सबसे पहले फसल के बीज अंकुरित होकर 15 दिन में कम से कम 6 इंच तक बढ़ते हैं और अगर खेत की मिट्टी उपजाऊ होगी तो मामूली घास उग आएगी, मगर उसकी लंबाई 1 इंच से ज्यादा नहीं होगी। यहां तक MFS का काम बहुत बढ़िया और ठीक ठाक चलता है, उसके बाद ही लूट की योजना शुरू होती है।

अब भाई ध्यान से देखो और सोचो। फसल और घास के बीच 5 इंच का अंतर था, अगर दोनों खाद खा रहे हैं तो पूरी उपज मिलने तक फसल और घास के बीच 5 इंच का अंतर होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा!! क्यों? **MFS में घास फसलों से ज्यादा तेजी से बढ़ती है और वो फसलों को अपने नीचे कैसे दबा लेती है? क्या आपको लगता है कि आपकी फसल ने नींद की गोलियां खाई हैं, वह आगे क्यों नहीं बढ़ रही? सच तो ये है कि प्रतिस्पर्धा में फसल घास से आगे थी तो खाद खाकर फसल आगे क्यों नहीं बढ़ती?** सबसे अहम सवाल ये है कि, क्या आपने फसल के बीजों के साथ ही घास के बीज भी बोए थे? जिस तरह से आपने उसे नष्ट किया, फिर वो घास बार-बार आती कहां से है और फसल से ज्यादा तेजी से कैसे बढ़ती है?

घास को दुश्मन बताकर 'MFS की यह विश्व लूट योजना कई वर्षों से चल रही है।' क्योंकि घास हटाने के बाद ही फसल की वृद्धि के लिए किसान खाद खरीदता है। आपने देखा ही होगा कि 'प्रतियोगिता में फसल 5 इंच के अंतर से आगे थी लेकिन 'प्राकृतिक चक्र' द्वारा दी गई मुफ्त खाद कहां है, जिसे खाकर फसल आगे बढ़ सके?' MFS से अधिक पाने के लालच में आपने पहली तीन फसलों में अपनी 'धरती माता' का सारा दूध और खून भी चूस लिया था, जिससे जमीन कमजोर और 'बंजर भूमि' बनना शुरू हुई थी, तो बताइए जीमन में खाद कहां है? आपको जो उत्पादन मिल रहा है, वह 'रासायनिक खाद और साथ डाला हुआ गोबर' के कारण मिल रहा है, जिसे आप खरीदकर उपयोग कर रहे हैं। ऐसी MFS उगाई गई फसल योजना से यह ठग लोग पहले वे बीमारी देते हैं और फिर राहत के नाम 'आधुनिक इलाज की गोली' बेचते हैं। संक्षेप में, वे दोनों हाथों से लूटते हैं और अब इस 'बुरे कर्म' से, यह MFS डेवलपर भी पीड़ित है और घुट-घुट कर मर रहे हैं। शायद एक प्रश्न होगा की जब जमीन में खाद ही नहीं, तो फिर जंगली घास का विकास हुआ कैसे?

घास और वनस्पति उगने का सत्य यह है वह केवल उन्हीं जगहों पर उगती है जहाँ उसे तीन चीजें मिलती हैं, 'सूर्य का प्रकाश, नमी और मिट्टी।' घास और कई अन्य पेड़-पौधे घर की छतों पर, सीमेंट की

दीवारों पर और इमारत की पानी की पाइपों के पास प्राकृतिक रूप से उगते हैं, कृपया सोचकर बताएं कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए खाद कौन दे रहा है? दरअसल, खेत में उगने वाली घास 'भगवान का वरदान' है और इसकी वजह से नई फसल भरपूर उपज देती है जो किसान के लिए 'सोने की बारिश' के समान है।

घास उगने के वैज्ञानिक कारण जानने के बाद, 1960 से श्री सावे परिवार OFS कर रहा है और घास को कभी उखाड़ते या हटाते तक नहीं हैं और फसल की कटाई तक वे घास को फसल का मित्र मानते हैं और दोनों मित्र 5 इंच की दूरी पर साथ साथ उगते हैं, क्योंकि वे केंचुओं द्वारा दी गई मुफ्त खाद से खेती करते हैं और इससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है।

MFS के कारण सभी उपज जहरीले और बेस्वाद हो गए हैं और वह खाकर लोग बीमार पड़ते हैं, कई बीमारियों से ग्रसित होते हैं और दवाई खाकर अपना जीवन जीते हैं, लेकिन ऐसे में कोई कब तक जी सकता है? तो इसका जवाब जानने के लिए मैं अशोक वाडीलाल संघवी, मुंबई में रहने वाला एक किसान और व्यापारी हूँ, जब मैं 21 साल का था, तब मुझे 'गाउट-जोड़ों का दर्द' नामक बीमारी हुई, जिसका आज तक कोई इलाज नहीं है। स्वस्थ जीवन की तलाश में हमारे पूर्वजों को 'प्राकृतिक भोजन' कैसे मिला था? जब वे बीमार पड़ते, तो उन्होंने कौन सी दवा ली थी? हिंदू - जैन धर्म के 'प्रथम श्री ऋषभदेव' है उन्होंने 'असि, मसि और कृषि' के बारे जानकारी दी थी मैं और किसान उसी सिस्टम से खेती करते थे, लेकिन MFS शुरू करने के लिए धोखेबाज लोगों ने उन सभी ग्रंथों को जला दिया। फिर भी मैंने OFS करने का फैसला किया था, लेकिन उस समय मुझे खेती की ABCD का भी पता न था। इसलिए वर्ष 1981 में मैं श्री सावे से मिलने और ज्ञान पाने गया था। मैं निरोगी उपज प्राप्त करने की श्री सावे की वैज्ञानिक सिस्टम देखकर आश्चर्यचकित हुआ था, इसलिए मैंने वही OFS करने का फैसला किया, इसलिए मैंने श्री सावे से पूछा, 'सर, OFS सीखने में कितना समय लगेगा और मुझे उस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए कितना भुगतान करना होगा?' मैंने अपने जीवनकाल में ऐसा उत्तर कभी नहीं सुना था जैसा कि 'श्री भास्कर हीराजी सावे' ने मुझे उस समय दिया था।

श्री सावे ने मुझसे पूछा था, 'क्या आपने खेती की पढ़ाई की है?' और मैंने कहा नहीं। फिर उन्होंने कहा, '1960 से मैंने अपने OFS के बारे में मुफ्त जानकारी दे रहा हूँ, कई पुरस्कार प्राप्त करने के बाद, दुनिया भर से लोग मेरे OFS को देखने आते हैं। आज तक मैंने अपने OFS के बारे में कुछ भी नहीं छुपाया और सारा सच कहा और दिखाया कि मैं अपनी फसल अपने तैयार किए स्थानीय बीजों से उगाता हूँ। खेती करने के लिए, बिना जुताई, खाद, कीटनाशकों के, बिना निराई-गुड़ाई के और बाजार से कुछ भी खरीदे बिना, हर साल मुझे अच्छा उत्पादन मिलता है और आज तक प्रत्येक पेड़ से थोड़ी सी पानी की सिंचाई से मुझे 350 से 400 नारियल मिलते हैं, इसी तरह मैं बागवानी में चीकू, आम और अन्य समृद्ध उत्पाद प्राप्त करता हूँ और चार से छह महीने की खेत की फसल से चावल, गेहूँ, सब्जियां और कई अन्य फसलें लेता हूँ। सब कुछ लगों की आँखों के सामने दिखाई देती है, लेकिन MFS की पढ़ाई के बाद, डिग्री प्राप्त करने का 'ब्रेनवॉश' किया होता है और केवल एक ही बात समझते है कि, 'उत्पादन के बाद खेत की मिट्टी की उर्वरता कम होती है, उसे बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद देना आवश्यक है !!??'

मैंने पढ़े लिखे लोगों को समझाने में अपना बहुत समय और ऊर्जा बर्बाद की है, लेकिन अशोक भाई, आपके मामले में आप कोरा कागज हैं और मैं जो भी लिखूंगा, आप उसे पढ़ेंगे, समझेंगे और OFS करेंगे, इसलिए आपको पढ़ाने के लिए मेरे लिए एक दिन काफी है और फिर आप खेती कर पाएंगे और कमाई 13

भी करेंगे। आप जैसे जैन व्यापारी को पढ़ाना मेरे लिए गर्व की बात होगी और इसलिए मैं आपको मुफ्त में पढ़ाऊंगा, क्योंकि मैं OFS के माध्यम से 'भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ किसान' बनाना चाहता हूँ और अपने देश के किसानों को समृद्ध बनाना चाहता हूँ।

इस दुनिया में 'फ्री - मुफ्त' का मतलब होता है किसी को अपने सिस्टम में फंसाना, मुझे शक हुआ कि 1960 से लोगों ने श्री सावे का OFS देखा है और और ठोस सिस्टम दिखाई भी है कि बिना किसी निवेश और मेहनत के भी मुनाफा कमाया जा सकता है!! तो फिर आज तक लोगों उसे क्यों नहीं अपनाया? क्या सारे फार्म विजिटर मूर्ख थे? या फिर श्री सावे ठीक से उन्हें समझा नहीं पाए। मैं एक व्यापारी हूँ और हम वही व्यापार -उद्योग करते हैं जिस में हमें मुनाफा दिखाई देता हो। तो मैंने सोचा **MFS** की तरह ये **OFS** भी लोगों को फंसाने की योजना हो सकती है?

श्री सावे को यह पता नहीं था कि मैंने अपने 'संघवी फार्म' डेवलपमेंट के लिए कई **MFS** डिग्री धारकों से रिपोर्ट तैयार करवाई हैं, सभी रिपोर्ट में अंदाजन 60 लाख रुपए का खर्च और करोड़ों का मुनाफा दिखाया था, **लेकिन भाई ये मुनाफा तो सिर्फ कागजों पर था**, साथ ही साथ प्रकृति के बारे में कई बातें लिखी थी, जैसे कि बारिश कम या ज्यादा हो सकती है, कीड़े-मकोड़े, पक्षी और जानवर पौधों पर हमला कर सकते हैं, जिससे नुकसान होने की संभावना है। अब बताइए भाई क्या कोई व्यापारी नुकसान की जानकारी मिलने के बाद खेती करेगा? सच तो ये है कि, हमें जीने के लिए निरोगी भोजन की जरूरत है, इसलिए **OFS** के लिए मैं श्री सावे को अपने 'संघवी फार्म' पर ले गया, ताकि मैं जान सकूँ कि निवेश, पैदावार का समय और खेती से मुझे कितना मुनाफा होगा?

अनुभवी श्री सावे ने मेरी जमीन देखी और कहा, 'अशोक भाई', जमीन बेचने वालों ने आपको धोखा देकर 'बंजर जमीन' बेच दी है, इस जमीन को देखिए, सिर्फ पत्थर ही पत्थर नजर आ रहे हैं, इस जमीन पर घास का एक तिनका भी नहीं उगता, यहां मिट्टी का नामोनिशान नहीं है, तो हम खेती कैसे कर सकते हैं? लेकिन चिंता मत कीजिए भाई, मुझे अपने OFS पर पूरा भरोसा है और अगर आप मेरी बात लिखना चाहते हैं, तो इस पत्थर पर लिख दीजिए कि 'इस जमीन को या MFS से ज्यादा कमाने के लिए किसानों ने अपनी अच्छी उपजाऊ जमीन को 'बंजर' बना दिया है, ऐसी जमीन फिर से उपजाऊ बन सकती है।' अब आपको इस 'संघवी फार्म' को उपजाऊ बनाने के लिए Rs.50,000/- खर्च करने होंगे और सिर्फ 4 महीने में तीन तरह के पौधे लगाकर आपको अपना निवेश मुनाफे के साथ वापस मिल जाएगा और फिर आप जीवन भर सिर्फ पानी की सिंचाई करके और बिना किसी लागत के मुनाफा कमा सकते हैं। यह भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए, मैं अपनी 'सेवाएँ निःशुल्क' दूँगा, क्योंकि जैसा कि मैंने कहा, मैं फिर से OFS के माध्यम से अपने भारत को एक सर्वश्रेष्ठ किसान देश बनाना चाहता हूँ और 'विश्व से भूखमरी' को खत्म करना चाहता हूँ।

सफलता की 100% गारंटी के बारे में श्री सावे पत्थर पर लिखकर देने को तैयार हैं, क्या कोई किसान - व्यापारी OFS करने से मना करेगा?



हमने संघवी फार्म की बंजर भूमि को 2 इंच तालाब की मिट्टी से ढक दिया।

वर्ष 1987 में, बंजर भूमि पर स्थित अपने 'संघवी फार्म' की 24 एकड़ भूमि पर, मैंने 'श्री सावे परिवार' से मार्गदर्शन लिया और जैसा कि श्री सावे, मेरे गुरु ने कहा था वैसे मात्र चार महीनों में, मुझे स्वस्थ जीवन के लिए पौष्टिक भोजन, 'श्री सावे OFS' के सभी वैज्ञानिक डेटा, बंजर भूमि पर एक बार की लागत वह भी मुनाफा के साथ वापस मिल गई। मैं वर्ष 2025 में अपनी वेबसाइट को अपडेट कर रहा हूँ, इसलिए 50,000/- रुपये के शुरुआती निवेश से लेकर आज तक 38 वर्षों में, मैंने '1/- रुपया' भी अधिक खर्च नहीं किया और केवल पानी की सिंचाई से मुझे सबसे अधिक निरोगी उत्पादन और अन्य से OFS कारण लाभ मिल रहा है। श्री सावे परिवार की कृपा से, मुझे कई पुरस्कार भी मिले हैं, आप उस सूची को 'Achievements'. में देखे।

दुनिया में 'किसान समाज' को लूट न पाए, इसलिए मैंने श्री सावे की जैविक खेती सिस्टम की सारी खोज को पंजीकृत कर दी और OFS की सभी जानकारी मुफ्त दे रहे हैं।



सिर्फ 4 महीने में संघवी फार्म का विकास और उत्पादन।

श्री सावे से मुझे जीवन जीने की सरल सिस्टम और करोड़पति बनने का मार्ग मिला, बहुत सी नई जानकारी भी मिली जो 'हिंदू-जैन धार्मिक पुस्तकों' में लिखी है। मुझे पता चला कि श्री सावे की सभी खोजों को क्यों दबा दि है। अगर OFS की सभी खोजों को सार्वजनिक कर दि जाए, तो 'दुनिया को भूख, पानी और ग्लोबल वार्मिंग से मुक्ति मिल सकती है।' मैंने सोचा, कुत्ते (देशद्रोही) भी अपनी ज़िंदगी जीते हैं लेकिन हम तो 'इंसान' हैं और समाज के लिए जीते हैं, इसलिए मैंने भी श्री सावे परिवार की तरह OFS का प्रचार शुरू किया और लोगों से 'विश्व की रक्षा के कार्य' के लिए समर्थन मांगते हैं।

'श्री सावे OFS में कोई लागत और कोई खर्च नहीं' यह सब देखकर भी लोगों ने क्यों नहीं अपनाते? मैंने सोचा कि अगर मैं बिज़नेस के नज़रिए से 'लाभ-हानि' के बारे में समझाऊँ और 'OFS को PowerPoint से दिखाऊँ तो लोग ज़रूर इसे अपनाएँगे।' निस्वार्थ भाव से, श्री सावे परिवार के साथ मिलकर मैंने OFS का प्रचार - प्रसार करना शुरू किया, मैंने 'निरोगी जीवन, सुख और समृद्धि का मार्ग', 4 भाषाओं में किताब भी लिखी।

जागरूकता के लिए और सही व्यवस्था दिखाने के लिए मैंने श्री सावे के साथ भ्रमण करना शुरू किया। 'सेमिनार में पहले श्री सावे अपने अनुभव बताते और फिर मैं श्री सावे की OFS को पावरपॉइंट से दिखाता' और कहता, 'भाईओ, खर्च करके, पशु समान मेहनत करके, सारी दुनिया MSF और अन्य प्रकार की कृषि करते हैं। पहले आप भरपूर खर्च करते हो, उसे कुछ मिला तो ठीक, वरना भाग्य का दोष मानते हो, जब भारी नुकसान हुआ तो आत्महत्या करते हो!! देश के गद्दारों की बात मानकर, सरकार का दोष निकालते हो, जबकि आप को बचाने श्री मोदी जी तो बार बार कहते कि, जैविक कृषि को अपनाए, मगर कोई सुनता नहीं और श्री सावे जो 1960 से मुफ्त का OFS ज्ञान दे रहे, वह अपनाते नहीं। एक तरफ समाज किसान को 'भगवान' कहता है, क्योंकि जीवन बसर के लिए किसान ही सभी को भोजन देता है और दूसरी तरफ, वही समाज किसानों को लूट 15

रहा है!! इसी तरह 'सब्सिडी' के नाम पर कई 'देशद्रोही - राजनेता' किसान को गुमराह करके सरकार से भीख मांगने को कहते हैं। **भाई सच्चाई देखो, इस विश्व में कोई जादू - मंत्र नहीं है, जो 1 से 1000 नए अनाज के दाना पैदा कर सके, यह जादू केवल किसान करता है,** फिर भी MSF करके देखो क्या हालत कर दी है!! हमारे खेत की तस्वीरें देखो और OFS समझो, अगर मेरे जैसे अनपढ़ व्यापारी, केवल सिंचाई करके, विश्व में सबसे अधिक उपज और मुनाफा ले रहा है, पशु धन की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा कर सकता हूँ, जबकि आप तो जन्म से ही किसान हो, आप कमाई क्यों नहीं कर सकते? **किसान भाई सोचो कि, आपकी मेहनत की कमाई कौन लूट रहा है?**

कृषि के लिए आपको 'गाय माता' से मुफ्त खाद मिलती थी, अब उस जगह MFS ने योजना बनाकर 4 गुना उत्पादन की सिस्टम दिखाई। यह सत्य है कि शुरुआत में किसान को केवल तीन साल तक 4 गुना भरपूर उत्पादन मिला और किसान MFS के जाल में फंस गए। रासायनिक खादों के कारण 'गाय माता' की जरूरत खत्म हो गई, इसलिए सबने उसे कसाई को बेचना शुरू किया। अब सोचिए भाइयों, जब रासायनिक खादों से आपको चार गुना उत्पादन और भारी मुनाफा मिल रहा है, तो सरकार टैक्स के पैसे को सब्सिडी में क्यों दे रही है? 1960 से लेकर आज तक हमने कोई सब्सिडी नहीं ली, फिर भी हम श्री सावे के OFS से सबसे ज्यादा उपज और मुनाफा ले रहे हैं। कई सालों से किसानों को लूटने के लिए ऐसी कई योजनाएं चल रही हैं और नीचे मैंने सारे कारण और सबूत के साथ दिए हैं।

किसानों की आत्महत्या रोकने और सभी को स्वस्थ भोजन उपलब्ध कराने के लिए, जैसा कि मैंने श्री सावे OFS के बारे में किताबें लिखी हैं और सारी जानकारी दी है। अब मेरे द्वारा तैयार कि, 'प्राकृतिक नमक की 2 गोली' लेने से, जैसे मुझे अपनी सभी असाध्य बीमारियों से राहत मिली, वही 2 गोली लेने से 15 दिनों में सभी बीमारी से कैसे राहत मिल सकती है और 'OFS का स्वस्थ भोजन' खाने से अधिक राहत कैसे मिलती है? वह सारी जानकारी इस वेबसाइट की 'Natural Tablet' विभाग में लिखी है।

'देखना ही विश्वास करना है', इसलिए हर शनिवार को हम 'सावे और संघवी' देश-विदेश से लोगों का हमारे फार्म पर स्वागत करते हैं, ताकि वे हमारे साथ जुड़ सकें और हम साथ मिलकर दबा दिए हुए ज्ञान को फैला सकें। इस एकता का कारण है, **'श्री सावे को उनके वैज्ञानिक अनुसंधान और शून्य लागत जैविक खेती प्रणाली के लिए कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।' (NABARD बैंक ने भी हमारी जानकारी प्रकाशित की थी।)** लेकिन लूटने के लिए, MFS डेवलपर्स और देश के गद्दारों ने वह श्री सावे OFS को फैलने से रोक दिया। आज भी किसान 'ग्रीन हाउस', 'हाइब्रिड बीज' आदि के नए MFS की कंप्यूटर तस्वीरों और वीडियो को देखकर फंस रहे हैं। **किसान अभी भी भ्रम में हैं और सोच रहे हैं, उन्हें MFS द्वारा अधिक उपज मिलेगी।**

MFS के भ्रम और मायाजाल से किसान को बाहर निकालने मेरा एक और प्रयत्न। शुरुआत में मैंने कहा कि मैं एक व्यापारी हूँ और हम उसी का व्यापार करते हैं जिसमें हमें लाभ दिखाई देता हो। **अब देखिए, मैंने अपनी आजीविका के लिए खेती क्यों चुनी? ताकि मैं करोड़पति बन सकूँ और स्वस्थ जीवन जी सकूँ।** अब एक व्यापारी के नज़रिए से मेरी गणना देखिए और आपको कारण समझ में आ जाएगा और मुझे यकीन है कि आप दूसरे कामों के साथ-साथ 'श्री सावे OFS' को भी अपनाएँगे।

एक आसान बात को समझते हैं। मूँग के बीज से पौधा तैयार करने के लिए एक प्लास्टिक की थैली लें, उसमें थोड़ी मिट्टी भरें, बीज बोएँ, फिर उसके अंकुरित करने थोड़ा पानी डालें और थैली को धूप में रख दें। समझिए कि एक बीज की कीमत 1 रुपये है और मिट्टी, पानी और धूप मुफ्त में उपलब्ध है और 'प्राकृतिक चक्र', सिस्टम से 16

वह बीज अंकुरित होगा, जड़ें विकसित होगी, फिर शाखाएँ, पत्तियाँ और एक पूर्ण पौधा तैयार होगा और इस प्रक्रिया के लिए हम केवल पानी सिंचाई के अलावा 'कुछ नहीं करते।' अब पौधा अपना कर्तव्य और धार्मिक कार्य समझकर 90 दिनों में कई बीज नवनिर्माण करके देता है। हमारे 'सहयोग' के और इस 'पुण्य कार्य' के बदले में हमें मूँग के कई तने मिलते हैं, जिन्हें हम तोड़ते हैं, सुखाते हैं और उसी मूँग का उपयोग अपने स्वस्थ जीवन के लिए करते हैं। दरअसल मिट्टी का मतलब है 'धरती माता' और जिस तरह हम 'अपनी माँ' द्वारा पिलाए गए दूध का हिसाब नहीं रखते, उसी तरह हमें 'धरती माता' द्वारा दी गई उपज का भी हिसाब नहीं रखना चाहिए, यही हमारी 'हिंदू संस्कृति' हमें सिखाती है, लेकिन हम सभी 'विदेशी और आधुनिक संस्कृति' में डूबे हुए हैं और हर उपज का हिसाब रखते हैं, तो आओ भाई हम भी इस 'धरती माता' द्वारा दी गई उपज (दूध) का हिसाब करें।

आपने देखा कि Rs.1/- के एक बीज की लागत से, मात्र 90 दिन में 'प्रकृति चक्र' केवल जल सिंचाई से, किसानों को '1,000 नये दाने नवनिर्माण, उत्पादन /सृजन /अंकुरित करके नये दाने मिलते हैं', अर्थात् किसानों को Rs.1.000/- की कमाई होती है। कारखानों में हम व्यापारी कभी कुछ भी नवनिर्माण और नया उत्पादन नहीं करते, बल्कि किसानों के कच्चे माल को केवल रूपांतर करते हैं, उस कार्य में हम बर्निंग लॉस, ओवरहेड और तैयार माल बेचने, जानबूझ केवल 10% नया रूपांतर की गिनती करके, विक्रय मूल्य का लेबल लगाते हैं। इसी प्रकार, 1,000 दानों की उपज के बदले हम केवल 10 दाने का उत्पादन प्राप्त हुआ मानते हैं तथा शेष उत्पादन को पशु, पक्षी, चूहे, देश के गद्दार तथा भिखारी खा गए मानकर आगे का हिसाब समझते हैं।

व्यापार में अगर हमें Rs.1/- की लागत से Rs.1/- का मुनाफा होता है तो हम उसे 100% मुनाफा मानते हैं। जबकि OFS में व्यापार की गिनती अनुसार Rs.1/- के खर्च से Rs.9/- का मुनाफा होता है जो कि 900% मुनाफा गिना जाता है, भाई इतना भारी मुनाफा तो जान जोखिम में डालकर और गलत काम करके भी नहीं मिलता!! ये गिनती सिर्फ एक दाने की है और वो भी कम उत्पादन गिनने के बाद, अब जरा सोचिए अगर हम इसे ऐसे ही गिनें जैसे आपको 1000 दाने मिल रहे हैं और अगर हम किसान के सारे खेत की उपज गिनें तो शायद कैलकुलेटर भी मुनाफा गिन नहीं पाएगा !!

सोचो भाई, तुम्हारे जैसा 'करोड़पति किसान इतना मुनाफा कमाने के बाद भी सब्सिडी की भीख मांग रहा है!!' मेरे प्यारे भाई और 'अन्नदाता भगवान', तुम्हें भीख मांगने पर कौन मजबूर कर रहा है? एक अनपढ़ भी समझ सकता है कि किसान के कच्चे माल को तैयार माल में केवल बदलकर ही हम फैक्ट्री मालिक कार और बंगले खरीद रहे हैं और मान लो MFS की वजह से तुम्हारा उत्पादन बंद हो गया तो फैक्ट्री कैसे चलेगी? लोग कैसे जिएंगे? मैंने पूरी दुनिया घूमी है, अगर किसान OFS करें और फैक्ट्री में हम सिर्फ प्रोसेसिंग करें तो भी दोनों को चार गुना मुनाफा होगा, क्योंकि दुनिया में स्वस्थ रहने के लिए OFS की निरोगी उपज की बहुत मांग है, इसलिए फूड प्रोसेसर को इस व्यापार पर ध्यान देना चाहिए और ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए गांव में प्रोसेसिंग फैक्ट्री लगानी चाहिए। मैंने ऐसी प्रोसेसिंग में अच्छा मुनाफा कमाया था।

सन् 1960 से स्व. श्री सावे के परिवार और मैं, हम दोनों ने ही 'हिन्दू-जैन संस्कृति और OFS' को ठोस सबूत के साथ प्रस्तुत किया है, लेकिन किसानों के पास न तो दूरदृष्टि है, ना ही विश्वास कि OFS से उनकी कृषि उपज बढ़ेगी और मुनाफा भी होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, भारतीय लोग भाग्य में बहुत विश्वास 17

करते हैं, वे कुछ भी नया करने की कोशिश नहीं करना चाहते और सोचते हैं कि 'अगर भाग्य में होगा, तो एक दिन जरूर मिलेगा!!' वे बस इसी 'अंधविश्वास' में माला जपते हैं और पूजा-पाठ करते हुए अपना जीवन बसर करते हैं। **भोजन की जरूरत तो सभी को है, लेकिन बीज बोने का काम कोई नहीं करना चाहता!!** हमारी 'कुछ न करो और अधिक कमाओ - OFS' को देखने के बाद भी लोग इतने आलसी हैं कि वे 'OFS द्वारा प्राकृतिक मुफ्त भोजन और पानी' प्राप्त करने का प्रयास तक नहीं करना चाहते। बहुत से लोग भिखारियों की तरह जीना चाहते हैं और सरकार की मुफ्त योजनाओं का इंतजार करते हैं। जब तक गुलाम रखने वाली योजनाएं और सब्सिडी बंद नहीं होती, तब तक कोई भी गहरी नींद से नहीं जागेगा।

कुछ ठोस सबूत देखिए, कैसे हम अपने बच्चों की जिंदगी बर्बाद करते हैं? बच्चे स्कूल-कॉलेजों में 'आधुनिक शिक्षा' पढ़ते हैं, आज तक एक भी कृषि कॉलेज ने दि जा रही उस शिक्षा सिस्टम से 1 रुपये का भी मुनाफा नहीं कमाया!! ऐसी पढ़ाई की वजह से बच्चे 'किताबी कीड़ा' बनते हैं। इसका ठोस सबूत देखिए, 10 साल की MFS पढ़ाई के बाद किसान का बेटा खेती नहीं कर सकता!! डॉक्टर खुद की बीमारी ठीक नहीं कर पाता!! ऐसी गलत शिक्षा और कागजी डिग्री सर्टिफिकेट से नई पीढ़ी सिर्फ 'नौकरी' (गुलामी) ही कर सकती है।

MFS शिक्षा के नाम पर, देश को लूटकर धन पाने के लिए, देखिए कैसे लोगों के टैक्स के पैसे और नई पीढ़ी का जीवन बर्बाद होता है। 'नेहरू - कांग्रेस' ने एक योजना बनाई और किसान समाज को यह कहा गया कि, 'डॉ. स्वामीनाथन ने 'आधुनिक कृषि सिस्टम - MFS' की खोज की है, जिससे हम कृषि उत्पादन को चार गुना बढ़ाने में सफलता मिली है और अब देश अनाज के उत्पादन में आत्मनिर्भर बन गया है, डॉ. को MFS के कृषि पंडित और भगवान हैं और भारत ने विश्व में 'हरित क्रांति' की है। यह कहते हुए, 'डॉ. को MFS की नई खोज के लिए कई पुरस्कार दिए गए।' उस दिन से, सिद्ध सिस्टम को, स्कूलों और कॉलेजों में, MFS की नई शिक्षा शुरू हुई, सफल हुई कृषि सिस्टम का प्रत्यक्ष काम करवा कर ज्ञान देने, भारत की हर कृषि कॉलेज को कम से कम 100 से लेकर 1,000 एकड़ जमीन दी और कृषि करने सभी आवश्यक इनपुट मुफ्त दिए, जिस पर बच्चे MFS की सिद्ध प्रणाली की शिक्षा आज भी प्राप्त कर रहे हैं।

व्यवहारिक रूप से सिद्ध MFS की पढ़ाई के लिए बच्चों से खेतों में मुफ्त में काम करवाया जाता है ताकि बच्चा और देश खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बन सके और MFS की ऐसी शिक्षा तब तक दी जाती है जब तक बच्चा डिग्री प्राप्त नहीं कर लेता। **सिद्ध MFS की पढ़ाई से सब कुछ मुफ्त दिया जाता है, लेकिन हजारों एकड़ कॉलेज की जमीन से, आजादी से लेकर आज तक भारत में किसी भी कॉलेज ने 1/- रुपए का भी मुनाफा नहीं कमाया!! बल्कि MFS की शिक्षा देने से देश को भारी नुकसान ही हुआ है, छात्रों के जीवन का अमूल्य समय ब्रेनवॉश करने में बर्बाद हुआ और आज भी यह योजना चालू है और आज भी हर साल भारत सरकार सभी 'कृषि महाविद्यालयों' को 75% मुफ्त अनुदान दे रही है!! जब श्री सावे ने डॉ. स्वामीनाथन से कई सवाल पूछे तो वे एक का भी जवाब नहीं दे पाए। इस बहस पर एक किताब प्रकाशित हुई है जो इस बात का पुख्ता सबूत है कि 'हरित क्रांति मनगढ़ंत' थी और श्री सावे ने इसका पर्दाफाश किया है।**

जब कॉलेज कमा नहीं सकता तो आज भी 75% अनुदान देने का क्या उद्देश्य हो सकता है? इस के 18

पीछे योजना यह है कि, डिग्री और ब्रेनवॉश के बाद, छात्र और किसान जहरीले उत्पाद उगाते हैं, इससे खेती की लागत बढ़ी और आसानी से लूट शुरू हुई और इसे आज 'भारत जो विश्व का सर्वश्रेष्ठ किसान था उसी की वर्तमान स्थिति देखें', इसी के साथी साथ 'जहरीला खाना खाकर, लाइलाज बीमारियां हुई और 'आधुनिक उपचार की गोली और शरीर के अंग काटने हजारों अस्पताल शुरू हुए।' संक्षेप में दोनो हाथो से आज भी लूट शुरू है।

हमने क्यों कहा कि 'आधुनिक शिक्षा' से बच्चे 'किताबी कीड़ा' बन रहे हैं और सिर्फ 'नौकरी (गुलामी)' कर रहे हैं? इसका सबूत देखिए, किसी भी 'विश्वविद्यालय' की वेबसाइट खोलिए, सबने एक ही विज्ञापन लिखा है, 'यहाँ से पढ़कर नौकरी मिलेगी (!!)' सबने एक ही बात क्यों लिखी है? क्योंकि कंपनियाँ अपना उद्योग चलाना चाहती हैं और वे हमारे बच्चों को अपनी सेवा - नौकरी (गुलामी) के लिए रखना चाहती हैं। ऐसे विज्ञापन लिखने के लिए 'विश्वविद्यालयों और कॉलेजों' को दान और अच्छा कमीशन मिलता है। अब उत्पादन लागत कम करने के लिए 'रॉबर्ट्स' का निर्माण हुआ, जिसके कारण हजारों लोगों की नौकरियाँ चली गईं। 'रॉबर्ट्स' के अत्यधिक उत्पादन के कारण छोटे 'उद्योग' बंद हो गए और कई बंद हो रहे हैं। यही कारण है कि डिग्री होने के बाद भी 'नौकरी' नहीं मिलती। अब सोचिए, बिना भोजन, पानी और पैसे के कोई कैसे जीवित रहेगा?

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ 'भूख और जल संकट' के बारे में जानती हैं, वे यह भी जानती हैं कि श्री सावे को कई 'राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार' क्यों मिले हैं? लेकिन अपने उद्योगों को चलाने के लिए वे कभी भी लोगों को 'शिक्षित और आत्मनिर्भर' बनने में मदद नहीं करती, क्योंकि खुद की 'चैरिटी फाउंडेशन' हैं और वे 'लोगों को गरीब ही रखना चाहती हैं', वे जानते हैं कि आलसी लोग केवल बच्चे पैदा करेंगे और जब कंपनियों को उनकी जरूरत होगी, तो वे उन्हें 'नौकरी' (गुलामी) पर रख सकते हैं और आसानी से 'शरीर के अंग' प्राप्त कर सकते हैं।

MFS के जहरीले भोजन के कारण कई प्रकार की बीमारी होती हैं और कई लोग बच्चे को जन्म नहीं दे पाते हैं, लेकिन OFS से यह दूर होता है और अपनी मनपसंद 'लड़का या लड़की' को जन्म दे सकते हैं, यह जानकारी 'प्राकृतिक गोली' विभाग में लिखी है। सच तो यह है कि हर कोई अपना जीवन सुख और शांति से जीना चाहता है और सभी को चिंता है कि, बुढ़ापे में हम कैसे जिंएंगे? एक आसान तरीका है कि कोई भी माता-पिता बनकर, बिना किसी की दया के 'आत्मनिर्भर बनकर, जीवन के अंत तक आत्मनिर्भर और खुशहाल जीवन जी सकता है।'

आपने अपने जीवन में 'ग्रिन वर्ल्ड के पेड़ - पौधे को उपज के साथ देखा है', भाई, क्या वह लगे फल और अनाज को वह खुद खाते हैं? जी नहीं!! 'हमारे जीवन बसर करने वह मुफ्त में देना ही उनका 'धर्म और कर्तव्य है।' इसलिए स्वस्थ रहने के लिए इस उत्पाद को 'ईश्वर का प्रसाद' मानकर स्वीकार करें और धरती के रक्षक बनें और कृपा करके 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप न करें, यही हमारा 'धर्म और कर्तव्य' है, इसी काम के लिए ही हमें जन्म मिला है। अब इस जन्म का आनंद लेते हुए हमें 'ईमानदारी' से काम करना चाहिए क्योंकि किसी भी वक्त वह परम कृपाळु हमें खाली हाथ वापस बुला लेगा, वह कोई नहीं जानता।

हकीकत में यही पेड़-पौधे हमारी सेवा करने वाले हमारे 'सच्चे बच्चे' हैं, बुढ़ापे का सहारा है, जो चुपचाप एक जगह खड़े रहते हैं, भागते नहीं, किसी के घर के दामाद नहीं बनते, हमसे झगड़ा नहीं करते, बिना मांगे हमें अपनी उपज देते हैं, ताकि हम उसे बेचकर खुशी-खुशी अपना जीवन जी सकें और यह सब बिना मांगे देते है। (जबकि अपने अधिकारों के लिए हमारे अपने बच्चे क्या करते हैं?) सच तो यह है कि 'हरी दुनिया के यह बच्चे' तो हमसे पानी तक नहीं मांगते, बल्कि सच्चे 'बेटे' बनकर चुपचाप तपती धूप में हमारी मुफ्त सेवा देने के लिए खड़े रहते हैं, इसलिए मानव धर्म समझ कर, इन बच्चों की प्यास बुझाने के लिए, 19

उतना ही पानी देना चाहिए ताकी हमारे निर्दोष बच्चों को घुट न हो।

‘ग्रिन वर्ल्ड के पेड़ - पौधे हमारे बच्चे हमारी दिल से सेवा करते हैं’, इस बात का एक ठोस सबूत देखिए। एक एकड़ में ‘संघवी फार्म का सूर्य मंडल’ बनाकर, 12 X 12 नारियल के पेड़ (144 बेटे), एक पेड़ 1 लीटर पानी पर जीवित रहते हैं और यदि उन्हें कुछ भी चाहिए तो वे प्राकृतिक चक्र से लेते हैं। श्री सावे के इस प्रयोग ने साबित कर दिया है कि बिना ‘नौकरी’ (गुलामी), केवल पानी सिंचाई से, 8 लोगों का परिवार खुशी से रह सकता है और भरपूर धन कमा सकता है। हमारा अनुरोध है, MFS द्वारा हम कई निर्दोष ‘ग्रीन वर्ल्ड’ दोस्तों को मारते हैं, इसलिए जीवन बसर करने हमें मुफ्त भोजन देने के लिए ‘ग्रीन वर्ल्ड’ असहाय है, अब आप बुद्धिमान हो सोचो जीवन पशु समान जीना है या फिर मनुष्य बनकर ‘निरोगी जीवन, सुख और समृद्धि’ पाकर, वह भी बिना लागत और केवल पानी सिंचन करके, ‘करोड़पति’ बनकर, बसर करना चाहते हो।

संक्षेप में आइये सम्पूर्ण हमारी ‘श्री सावे जैविक खेती सिस्टम - OFS’ को समझते हैं। जीने के लिए हमें ‘पेड़-पौधों’ से मुफ्त भोजन मिलता है और वे एक स्थान पर खड़े हैं, हिल नहीं सकते, अब हमें जीना है, इसलिए उन्हें भी जीवित रखने के लिए हमें उस के भोजन के लिए गोबर देना चाहिए। ‘ग्रिन वर्ल्ड के पेड़ - पौधे’ को गोबर देने के लिए हमें ‘अपने पशु और धन’ को बचाना होगा और उन्हें जीवित रखने के लिए हमें घास की आवश्यकता है। अब पशुओं के चारे के लिए हमें ‘प्राकृतिक चक्र’ से मुफ्त में फसल के साथ उगने वाली घास मुफ्त में मिलती है, इसलिए उसे कायम उगने दें और हम जैसे ‘बाल कटवाते’ हैं, उसी प्रकार घास का कुछ भाग जमीन में छोड़कर, जमीन के ऊपर का भाग काटकर पशुओं को खिलाएं, जिससे हमें मुफ्त का गोबर मिलेगा। अब उस गोबर से ‘किसानों के परम मित्र केंचुए’ स्वास्थ्यवर्धक भोजन बनाते हैं और एक जगह खड़े पेड़-पौधों की जड़ों के मुँह में रखते हैं। इस सारी सेवा के बदले पेड़-पौधे हमें सब मुफ्त में देता है। शास्त्र कहता है ‘दाने दाने पर लिखा है खाने वालों का नाम’, इसलिए उस उपज से कुछ हिस्सा हमें अपने ‘फसल रक्षक मित्र - पशु - पक्षियों’ को खिलाना चाहिए जिससे मुफ्त की अधिक खाद मिलती है और पेड़-पौधों और अधिक उपज दे पाते हैं। महोदय, इसे ‘प्राकृतिक चक्र’ कहते हैं और इस तरह हम ‘मनुष्यों’ को जीने के लिए सब कुछ मुफ्त मिलता है और ‘प्राकृतिक चक्र’ और इस सुंदर पृथ्वी की रक्षा के लिए हमें यह ‘अनमोल मानव जन्म’ मिला है। इसलिए ‘सभी धर्मों और हिंदू शास्त्रों’ में लिखा है कि, ‘जियो और जीने दो, कुछ मत करो और खूब कमाओ।’ अन्य जीव कभी भी ‘प्राकृतिक चक्र’ में हस्तक्षेप नहीं करते, इसलिए वे सभी सुखपूर्वक रह रहे हैं और हम सभी जानते हैं कि हमें खाली हाथ जाना है, फिर भी देखिए, हम क्या कर रहे हैं? जिस ‘प्रभु’ ने हमें 100% शुद्ध शाकाहारी बनाया है, फिरभी न जाने किस स्वाद के लिए ‘मानव’ पापी बन गया है और हजारों निर्दोष फसल रक्ष, पशु - पक्षी को मारकर, बदबू को छुपाने, अशुद्ध, मसाले लगाकर, अपने पेट को कब्रिस्तान बनाकर, मांसाहार भोजन खाता है!! अब आप ही बताइए भाई, ‘प्राकृतिक चक्र’ की मुफ्त सेवा के लाभ से हमें ‘भोजन-पानी’ मिलेगा कैसे और ‘करोड़पति’ बनेंगे कैसे?

मैं ‘आदरणीय एवं सम्मानित आचार्य, प्राध्यापक एवं शिक्षक’ से पूछना चाहता हूँ। सच तो यह है कि आप ही नई पीढ़ी के जीवन निर्माता हैं और उनके लिए ‘देवी-देवता’ हैं। कृपया दिल पर हाथ रखकर कहें कि, क्या आप सिर्फ तनख्वाह पाने, अपनी नौकरी बचाने, मजबूर बनकर, किसी के दबाव में केवल आधुनिक पद्धतियाँ सिखाकर, खुद का और बच्चों का कीमती समय बर्बाद नहीं कर रहे हैं? आप भली-भाँति जानते हैं कि आज की आधुनिक शिक्षा जीवन में किसी काम की नहीं और आपने MFS और OFS के पुख्ता सबूत भी पढ़े हैं। प्रिय गुरुदेव, नई पीढ़ी के आप ‘देवी-देवता’ हो और देश हर तरह से बर्बाद हो रहा है, फिर आप गलत शिक्षा देकर बुरे कर्म 20

क्यों कर रहे हैं और बच्चों को 'किताबी कीड़ा' क्यों बना रहे हैं? मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि, कुत्ते भी अपना जीवन जीते हैं और अपना पेट भरते हैं, लेकिन हमें अच्छे कर्मों के कारण मानव जीवन मिला है जिसका उपयोग घर, परिवार, समाज और देश की समृद्धि के लिए किया जाना चाहिए। **सोचिए, हजारों लोगों में से भगवान ने आपको 'शिक्षण का पवित्र कार्य' करने का अवसर क्यों दिया है?** श्री सावे गुरु मेरे जीवन की प्रगति के लिए 'भगवान' बनकर आए और मुझे सही सिस्टम और ईमानदारी से करोड़पति बनने का रास्ता दिखाया। हमारी विनती है, बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए हमारे खेत पर उन्हें लाएं, हमारी वास्तविक कार्य सिस्टम दिखाएं और उन्हें सही शिक्षा दें कि जिसे सभी 'ग्लोबल वार्मिंग' से छुटकारा पा सके। यदि यह संभव नहीं है तो हम 'पावरपॉइंट' द्वारा अपनी श्री सावे OFS दिखा सकते हैं कि, कैसे 'प्रकृति चक्र' और 'पर्यावरण की रक्षा', 'ग्लोबल वार्मिंग' से छुटकारा और 'प्राकृतिक गोली' से सभी बीमारियों से कैसे छुटकारा पा सकते हैं।

आज दुनिया को श्री सावे जी जैसे गुरु की जरूरत है जो दूसरों के लिए जिए। दुनिया को सभी संकटों से बचाने के लिए, बिना किसी लालच और इनाम के उन्होंने अपने सभी शोधों को ठोस सबूतों के साथ उजागर किया है, उन्होंने 'समाज को स्वस्थ जीवन, सुख और समृद्धि पाने का रास्ता दिखाया है।' इसलिए भारत और दुनिया को **MFS** से बाहर निकालने के लिए, कल्पवृक्ष फार्म पर 3 दिन के OFS शिक्षण देने के क्लास चला रहे हैं। श्री मोदी जी ने OFS अपनाने के लिए कहा और श्री मोदी दुनिया का पहला 'ऑर्गेनिक फार्मिंग कॉलेज' शुरू कर रहे हैं और उन्होंने गुजरात में काम शुरू कर दिया है और ज्ञान और पढ़ाई के लिए, **श्री सावे परिवार के साथ समझौता किया है।** लेकिन आप जानते हैं, भारत की प्रगति और 'महान नेक काम' को कौन रोक रहा है?

OFS का श्री सावे गुरु मंत्र है, बाजार से ऐसी कोई भी चीज न खरीदें जो अधिक उत्पादन देने के नाम पर बेची जा रही हो और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसान को अपने खेत से केवल निरोगी उपज ही बाहर भेजनी चाहिए और उस उपज से किसान को अगली तीन फसलों के बीज निकालने चाहिए। **(हाइब्रिड बीज उपज से भी, बड़े आकार के बीज लेकर, तीन बार वही बोकर और नई फसल लेकर, हमने अपने स्थानीय बीज तैयार किए हैं।)** फसल के अलावा किसान को खेत से एक इंच घास भी बाहर जाने से रोकना चाहिए, क्योंकि जिसे आप कचरा समझते हो उसी से आप 'सोना और चांदी' खरीदने के लिए भरपूर उपज मिलती है। **सरकार से सब्सिडी मांगने के बजाय, उनसे अनुरोध करें कि वे शहर के जैविक कचरे को गाँव में लाएँ और उसे अपने खेत में आप ले आएँ, जिसे 'किसानों के सबसे अच्छे मित्र - केंचुआ' अच्छी और मुफ्त जैविक खाद में बदल देंगे।** इस तरह, सरकार को मिलने वाला टैक्स का पैसा बचेगा, सब्सिडी बंद होगी और शहर के कचरे के निपटान की समस्या भी हल हो जाएगी।

मैंने एक दिन श्री सावे से पूछा, आप 1960 से OFS करते हो, आपको वैज्ञानिक सिस्टम के लिए कई पुरस्कार मिले हैं, कई लोग खेतों में आकर गए, कई लोगोने आपकी खोज को चुरा कर, सरकार को धोखा और किसानों को लूटा है, कई ने दावा किया है कि यह उनकी खोज है और पुरस्कार भी पाए हैं। गुरु जी, आपके पास उनके खिलाफ सारे सबूत हैं, लेकिन आप आज तक चुप हैं और उन्हें बेनकाब नहीं करते। आज भी आप बिना किसी स्वार्थ के अपने OFS को मुफ्त में सभी को दिखाते हैं!! **गुरु जी, आपको इस ईमानदारी से क्या मिलता है?**

जीवन में शांति और खुशी लाने के लिए, **मेरे गुरु श्री सावे ने मुझे सबसे अच्छा ज्ञान और 'गुरु मंत्र' दिए।** श्री सावे ने कहा, 'भगवान कृष्ण ने पवित्र ग्रंथ में लिखा है 'अच्छे कर्म करो और फल की प्रतीक्षा मत करो', क्योंकि किसी को भी समय से पहले और भाग्य से अधिक फल नहीं मिलता।' आप जो पैसा कमाते हैं, चाहे वह सही हो या गलत, हम अपनी अंतिम यात्रा में अपने साथ नहीं ले जा सकते और कोई भी इससे खुशी नहीं 21

खरीद सकता, लेकिन जब आप बिना किसी अपेक्षा, पुरस्कार और निस्वार्थ भाव से किसी की भी सेवा करते हैं, तभी हमें जीवन में खुशी मिलती है और यह मोक्ष पाने का एक सही तरीका है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके अच्छे काम और ईमानदारी कभी छिपी नहीं, इसलिए आज तक मैंने कभी कोई पुरस्कार नहीं मांगा और देखो, 'भगवान' ने मेरे जीवन में आप जैसे 'जैन व्यापारी' को क्यों भेजा? आप मेरी निस्वार्थ भाव से मदद क्यों कर रहे हैं और हम दोनों के प्राप्त परिणाम देखिए, मेरे जैसे छोटे किसान को कई प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार' मिले और आपकी सभी 'असाध्य बीमारियां' गईं। जब कोई निर्दोष लोगों को लूटता है, मेहनत की कमाई लूटता है, किसी का हक छीनता है तो उस व्यक्ति के दिल से एक श्राप निकलता है और जो भी ऐसा अन्याय करता है, उसे इसकी सजा मिलती है और किसी भी तरह से उस व्यक्ति को सजा भुगतनी पड़ती है और यही बात सभी शास्त्रों में लिखी है। एक बात का ध्यान रखें, अपने काम सच्चे मन और दिल से करें, किसी भी व्यक्ति को धोखेबाज न समझें, अपना सारा सच दिखाएं, फिर वह उसे अपनाए या न अपनाए, यह उसकी मरजी है। **ऐसे में कौन ईमानदार है और कौन धोखेबाज, इसकी गहराई में न जाएं और अपना काम ईमानदारी से करें, समझे संघवी भाई।**

सभी धर्म कहते हैं 'जियो और जीने दो।' हमें यह जन्म पशुओं की तरह काम करने, धन कमाने, युद्ध में प्राणों की आहुति देने और धर्म की रक्षा करने, किसी का धन, देश की संपत्ति और जमीन छीनने के लिए नहीं मिला है। साथ ही जहरीली दवाइयों का सेवन करके घुटन भरी जिंदगी जीने के लिए भी नहीं मिला है, बल्कि पिछले अच्छे 'कर्मों' के बदले में हमें यह मानव जीवन मिला है। आनंद और खुशी देने के लिए 'भगवान' अपना 'प्राकृतिक चक्र' चला रहे हैं और सब कुछ मुफ्त में दे रहे हैं। लेकिन MFS ने 'पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग, भूख और पानी की समस्या' सभी को पैदा की है और अभी भी कई पागल लोग पूरी दुनिया पर राज करना चाहते हैं और युद्ध करके, 'रसायन और परमाणु बम' से भूमि को और नष्ट किया जा रहा है, जिससे और भी समस्याएं बढ़ रही हैं। ऐसी स्थिति में केवल 'भारत ही विश्व शांति ला सकता है।' क्योंकि हमारे पूर्वज जानते थे कि हिंसा करने के कर्म से जीवन में दुख मिलता है और यह बात सभी को याद रखनी चाहिए, इसलिए पूर्वजों ने हिंसा और दुख शब्द को लेकर हिंदू समाज की स्थापना की। आज भी हम शांति में विश्वास करते हैं और भारत सभी धर्मों के साथ मिलकर आगे बढ़ रहा है। लेकिन हमारे अच्छे स्वभाव के कारण कुछ लोग हमें गलत समझ रहे हैं, उन्हें पता नहीं है कि अब भारत में श्री मोदी जी हैं।

अंग्रेज 200 साल तक राज करके भी भारत को लूट नहीं पाए, तब उन्होंने भारत की समृद्धि का कारण खोजा और फिर MFS और हाइब्रिड बीज तैयार किए। नए बीज के पौधे की वृद्धि की लंबाई 'प्राकृतिक घास' से कम थी इसलिए फसलों को सूरज की रोशनी नहीं मिलती थी, इसलिए उस समय वैज्ञानिकों ने गलत बातें कहना शुरू कर दिया और किसानों ने मान लिया कि 'घास फसल की दुश्मन है' और बस उसी दिन से घास को उखाड़ना शुरू कर दिया। 'असल में गायों और पशुओं के लिए यह मुफ्त घास और मुफ्त का गोबर बंद करना था और ताकी खुद की खाद बेच सके वह एक योजना थी।' हाइब्रिड से उगाए गए पौधे पत्थर की तरह सख्त होते हैं, इसलिए जानवर उन्हें नहीं खा सकते, इसलिए किसानों ने 'पशु चारा' खरीदना शुरू कर दिया और कुछ दिनों के बाद किसानों को घर में गाय रखने का बोझ महसूस होने लगा, 'हिंदू' होने के नाते और यह जानते हुए कि 'गाय माता है और पशु धन है, फिर भी लोगों ने अपने मवेशियों को कसाई को देना शुरू कर दिया।' इस तरह, कृषि प्रधान देश को लूटने की योजना उस दिन से शुरू हुई और अभी भी चल रही है। इसी तरह, MFS ने धीरे-धीरे पूरी दुनिया में उत्पात मचाना शुरू कर दिया है, लोग 22

जहरीले उत्पादों के कारण बीमार पड़ने लगे हैं और इलाज के नाम पर उन्होंने अपनी 'आधुनिक दवाइयां' बेचना शुरू किया, दवा की साइड-इफेक्ट्स के कारण सभी घुटन भरी जिंदगी जी रहे हैं और हर घर में कैंसर है। 'अंग्रेजों द्वारा भारत की समृद्धि को लूटने और नष्ट करने का यह रहस्य भी श्री सावे ने खोजा था।'

हजारों की संख्या में गोवंश का वध हो चुका है और बहुत का वध होने वाला है, ऐसे में सवाल उठता है कि भविष्य में खेती कैसे होगी और हमें मुफ्त खाद कहां से मिलेगी? इस लिए OFS के लिए हम 'गोबर गैस सिस्टम' का उपयोग कर रहे हैं। रसोई के लिए गैस मिलने के बाद हम बचे हुए मल के कचरे-स्लरी को खाद के रूप में उपयोग कर रहे हैं, जबकि पुराने OFS में पूर्वज खेतों में जाकर मल-मूत्र त्यागते थे, जिसे श्री सावे 'सोना-हीरा' देने वाली खाद कहते थे।

MFS के कारण कृषि उत्पादन में 4 गुना वृद्धि हुई है, 'रोबोट सिस्टम' के कारण उत्पादन में 4 गुना वृद्धि हुई है, जिससे उत्पादन की लागत कम हुई है। अब देखते हैं, क्या आप वास्तव में 'उच्च शिक्षित, बुद्धिमान और डिग्रीधारी' हैं, या आप 'मूर्ख, मंदबुद्धि या किताबी कीड़ा हैं।' कृपया बताएं, 'कृषि और उद्योगों में चार गुना अधिक उत्पादन और वह भी कम लागत पर हो रही है, इसे उत्पादन के बाद, जीवन बसर का खर्च कम होना चाहिए या बढ़ना चाहिए?' यदि आप वास्तव में शिक्षित हैं, तो आप जैसे लोगों को 'संयुक्त परिवार' में खुशी से रहना चाहिए, केवल पैसे के लिए विदेश भागकर 'गोरे लोगों की नौकरी-गुलामी' नहीं करनी चाहिए और वास्तव में माता-पिता की देखभाल करनी चाहिए और उनके मार्गदर्शन में जीवन जीना चाहिए, लेकिन आपको तो 'किताबी कीड़ा' बनाकर, भाई अब सब कुछ उल्टा चल रहा है !! आधुनिक विज्ञान के नाम पर आप 'चाँद और मंगल' पर जाते हैं और दूसरी तरफ माता-पिता को 'वृद्धाश्रम' में हम भेजते हैं, अपने बच्चों को 'बोर्डिंग स्कूल' में भेजते हैं, 'प्रकृति चक्र' के हर काम में बार-बार दखल देते हैं और हर तरह के गलत तरीकों से पैसा कमाते हैं। असल में आप कृषि में डिग्रीधारी हैं, लेकिन आप लोग अपनी बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि दूसरों की बात मानकर खुद को बर्बाद करते हैं और अपनी उपजाऊ धरती को 'चाँद की भूमि' जैसा बदलते हैं!! MFS के माध्यम से गलत शिक्षा देकर लोग 'भगवान' के सभी विभागों को छीन लेना चाहते हैं और इतने विनाश के बाद भी वे अभी भी कई नए प्रयोग करना चाहते हैं, ऐसा करके उन्होंने दुनिया की क्या हाल कर दि है??!! अगर ऐसा ही चलता रहा तो भविष्य में 'खाद्य और जल' पाने के लिए 'विश्व युद्ध' हो सकता है, अगर हमें इसे रोकना है तो हमें साथ मिलकर एक नई जिंदगी जीने की योजना बनानी होगी?

हिंदू धर्म - जैन धर्म में, अपने दिल की गहराई से क्षमा मांगने के लिए हम कहते हैं 'मिच्छामि दुक्कड़म' - जिसका अर्थ है, 'अगर हमने जाने-अनजाने में कोई गलती की है या अपने लालच भरे काम से किसी को दुख पहुँचाया है, तो मैं अपनी सभी गलतियों के लिए क्षमा माँग रहा हूँ।' इसी तरह, अगर किसी ने मुझे दुख पहुँचाया है, तो मैं भी अपने दिल और दिमाग की गहराई से उसे माफ़ करता हूँ।' इस शुद्ध भावना के साथ क्षमा माँगने से, दयालु 'भगवान भी हमारी सभी गलतियों को माफ़ कर देते हैं।' इसका मतलब यह नहीं है कि हम बार-बार गलतियाँ करें और अपने 'प्यारे दयालु भगवान' से क्षमा माँगें।

दरअसल, कई गलतियाँ करने के बाद, जीवन की सभी परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए हम सभी मंदिर, मस्जिद और चर्च में दयालु भगवान को खोजते हैं। हर दिन अपनी प्रार्थनाओं में और अपने लालच को पूरा करने के लिए हम कहते हैं, 'हे भगवान, देखो मैं तुम्हें नारियल और फूल दे रहा हूँ, वादा करता हूँ कि अगर तुम मेरा काम करोगे, तो मैं कुछ धन तुम्हारी पेट्टी में भी डालूंगा या कुछ दान करूँगा, बस मेरा 23

काम हो जाए।' इस तरह, एक 'करोड़पति' बनने के लिए हम एक भिखारी की तरह मदद माँगते हैं!! सच तो यह है कि यह सारी खुशियाँ, पैसा और जीवन उसी का दिया हुआ है और हम उसी पैसे से उसे रिश्त देने की कोशिश करते हैं। यह समझ लें कि अगर हमें भीख या गलत तरीकों से पैसा मिल भी जाए, तो हमें अपनी अंतिम यात्रा में सब कुछ छोड़ना पड़ेगा इसलिए बेहतर है कि हम 'प्राकृतिक चक्र' की मदद करें। **भाई, ये सब रिश्त देने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि सबको 'करोड़पति' बनाने के लिए हमारा भगवान हमें अपने दोनों हाथों से देना चाहता है और वो सबको दे भी रहा है और वो 'भगवान हम सबकी आँखों के सामने है, हम उसे हर वक्त देखते हैं पर उसे जानने की वो दृष्टि हमारे पास नहीं है',** क्योंकि **MFS** अपना देने के बाद हमारा पेट नहीं भरता, इसलिए हम उस 'भगवान' को पहचान नहीं पाते और हम नीति नियम अनुसार अमीर नहीं बन पाते।

हम 'सावे और संघवी' उस 'दयालु ईश्वर' से परिचय करवाएंगे जो सभी को मुफ्त में जीवन जीने का मौका दे रहा है। जीवन में गलतियाँ तो सभी से होती हैं, लेकिन जिस दिन हमने सच्चे दिल से 'सहायक ईश्वर' से अपनी गलतियों के लिए माफ़ी मांगी, उसी दिन हमारी पूरी ज़िंदगी बदल गई।

10 वर्ष तक **MFS** करते हुए 1960 में श्री सावे को ज्ञात हुआ कि **MFS** करके मैं बार-बार 'प्रकृति चक्र' में हस्तक्षेप कर रहा हूँ। सत्य तो यह है कि बीज बोने से लेकर उत्पादन प्राप्त करने तक सब कुछ प्रकृति ही करती है और मैं केवल सिंचाई करता हूँ, परन्तु मैं **MFS** खाद का प्रयोग कर रहा हूँ, 'मातृभूमि' पर भारी ट्रैक्टर चला रहा हूँ, बार-बार घास उखाड़ रहा हूँ और 'मातृभूमि के वस्त्र उतार रहा हूँ', अपनी उपजाऊ भूमि को खराब कर रहा हूँ, घास उखाड़ने से सूर्य की रोशनी धरती पर पड़ रही है जिससे वायुमंडल का तापमान बढ़ रहा है और **MFS** ने 'आसमान की ओजोन परत' में छेद कर दिया है। इस प्रणाली ने 'पर्यावरण को बिगाड़ दिया है' जिसका प्रभाव वर्षा पर पड़ रहा है और कहीं कम हो रही है तो कहीं बढ़ रही है। श्री सावे को ज्ञात हुआ कि अधिक पाने के लालच में यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि **MFS** को अपना देने से मैं 'पृथ्वी, आकाश, वायु, जल को खराब कर रहा हूँ और इससे गर्मी बढ़ रही है।' संक्षेप में, एक तरफ हम अपने घर के आंगन में लगे 'पेड़ और तुलसी के पौधे' की पूजा करते हैं, क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि पेड़ और पौधे में 'भगवान कृष्ण' का वास होता है, मैं भी उसकी पूजा कर रहा हूँ और दूसरी तरफ मैं 'भगवान' के काम में **MFS** द्वारा दखल दे रहा हूँ, ऊपर से मैं दीपक, अगरबत्ती, मोमबत्ती जलाकर मदद माँग रहा हूँ!! मेरे 'बुरे कर्मों' की सजा के कारण 'भगवान' ने मेरे एक कान की सुनने की शक्ति छीन ली है और मैं इस 'ग्लोबल वार्मिंग' का एक अपराधी हूँ।

श्री सावे को अपने बचपन के दिन याद आ गए कि वे संयुक्त परिवार में रहते थे, हिंदू शास्त्रों के नियमों के अनुसार खेती करते थे, अच्छा कमाते थे और सुखी जीवन जीते थे। जैसे ही उन्हें अपनी पुरानी यादें याद आईं, उन्होंने खेती में कुछ नया करने का सोचा। श्री सावे ने देखा कि पशु-पक्षी 'प्राकृतिक नियमों' के अनुसार बहुत खुशी से अपना जीवन जी रहे हैं, लेकिन मैं **MFS** द्वारा अधिक पाने के लालच में 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप करके बीमारियों से भरा जीवन जी रहा हूँ, जो भगवान खुशी से मुफ्त में दे रहे हैं, मैं उसे भी खो रहा हूँ। श्री सावे को अपनी गलती का एहसास हुआ और 1960 में, उसी रात, वे **MFS** के रासायनिक उर्वरकों को बेचकर लाखों का मुनाफा कमा रहे थे और एक पापी जीवन जी रहे थे, इसलिए जीवन की गलती को सुधारने के लिए, उन्होंने उस एजेंसी को छोड़ दिया और **OFS** के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया जो 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप नहीं करते।

अब तक आप श्री सावे के **OFS** के सभी वैज्ञानिक खोज को सबूत के साथ जान चुके हैं, अब 24

देखिए कि जो 'भगवान' हमें मुफ्त भोजन और पानी दे रहे हैं, चूँकि हम उन्हें पहचान नहीं पाते इसलिए उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। पहले 'भगवान' शब्द के अर्थ को जानें जो हमारी हर तरह मदद कर रहे हैं।

'गौ माता' और 'प्राकृतिक चक्र' की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों के विद्वानों ने 'हिंदू संस्कृति' के शास्त्र लिखे हैं और वे जानते थे कि हम 'भगवान -ईश्वर -प्रभु -खुदा -गॉड' को किसी भी नाम से पुकारते हैं और इस नाम पर लोग कुछ भी गलत करने से डरते हैं और इस नाम के तहत किसी भी काम के लिए समाज पूरा सहयोग और समर्थन देते हैं। इसलिए 'भगवान' शब्द की रचना समाज को डर में रखने और 'प्राकृतिक चक्र' में हस्तक्षेप न करे इसलिए किया था। मन की शांति के लिए एक आसान प्रार्थना तैयार की थी, नई खेती शुरू करने के लिए सभी किसान इस प्रार्थना को बोलते हैं।

नई फसल शुरू करने से पहले, लोग हल और धरती माता की पूजा करते थे और प्रार्थना करते थे, 'हे भगवान', जैसे एक माँ अपने बच्चों को जीवन चलाने के लिए अपने स्तन से अमृत के समान दूध पिलाती है और दूध पीते समय, बच्चा कभी-कभी माँ के स्तन को काट लेता है, फिर भी माँ उसे प्यार से दूध पिलाती है, उसी तरह, 'धरती माँ', इस धरती में अनाज बोन के लिए मैं हल से इस जमीन को जोत रहा हूँ, इससे आपको कुछ कष्ट हो सकता है, फिर भी माँ, कृपा करके थोड़ा दर्द सहन करें और अपने बच्चों और मेरे परिवार को पालने के लिए अमृत समान दूध की तरह, बहुत सारे नए अनाज दाने की कृपा करें।

यह भारत की संस्कृति और कृषि प्रणाली थी जो 'प्राकृतिक चक्र' को सहायता प्रदान करती थी और यह जानकारी सभी को थी, फिर भी पूर्वजों के विद्वान मानव की प्रकृति को जानते थे और सभी वैज्ञानिक सिस्टम को समझाना बहुत कठिन था, इसलिए समाज को डराकर रखने, पर्यावरण और 'प्राकृतिक चक्र' की रक्षा करने, उस समय के विद्वानों ने भूमि से 'भ' लिया, गगन से 'ग' लिया, वायु से 'व' लिया, अग्नि से 'अ' लिया और पानी से 'न' - लिया और प्रभु के नाम का एक नया शब्द बनाया 'भ ग व अ न - भगवान।'

श्री सावे को 'प्राकृतिक चक्र' के हस्तक्षेप का पता चला, उन्होंने तब से केवल प्राथमिक जुताई, बीज बोन के बाद, सारे काम प्रकृति पर छोड़ दिए और श्री सावे का भाग्य खुल गया। 'अच्छे और नेक काम' के बदले में, 'भगवान' ने उन्हें भरपूर निरोगी उत्पादन और भारी मुनाफा दिया जो किसी अन्य क्षेत्र में नहीं मिलता। जिस नारियल के पेड़ पर अधिक लागत, हर साल MFS से केवल 30 से 60 नारियल मिलते थे, वही पेड़ केवल पानी से, हर साल 300 से 350 नारियल की उपज दे रहा है, जो 'विश्व में सबसे अधिक' है इसलिए 'लिम्का बुक' में रिकॉर्ड दर्ज हुआ, मगर 'गिनीज बुक' दर्ज नहीं करना चाहती!! क्योंकि यह MFS कंपनी का है।

आज लोग MFS से शिक्षित हैं और हर चीज के लिए उन्हें 'वैज्ञानिक प्रमाण' चाहिए, फिर भी हम यह नहीं समझ पाते कि लोग केवल छपी हुई सामग्री, फोटो, वीडियो पर कैसे विश्वास कर लेते हैं और फंस जाते हैं!! हम कहते हैं 'भाई पहले देखो, विश्वास करो और फिर अपनाओ।' हमारा मानना है कि 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है', इसलिए लोगों में OFS में विश्वास पैदा करने के लिए, हम हर 'शनिवार' को लोगों को अपने फार्म पर आने के लिए आमंत्रित करते हैं ताकि वे हमारी OFS के काम को ठोस सबूत के साथ दिख सकें। स्वर्गीय श्री सावे गुरु की इच्छानुसार, हम 'सावे और संघवी' अपने 'श्री सावे OFS' की सारी जानकारी समाज के चरणों में रखी है, ताकि हमारे परिवारों को मोक्ष प्राप्ति का आशीर्वाद मिले, हम मिलकर विश्व शांति कर सकें, भूख और पानी की समस्या का समाधान ला सकें और 'श्री सावे की OFS द्वारा विश्व को ग्लोबल वार्मिंग से मुक्त' करने में सफल हो, बस भगवान से हमारी यही प्रार्थना है।

सभी 'आधुनिक सभी सिस्टम' से छुटकारा पाना चाहते हैं, लेकिन सभी लाचार है, क्योंकि किसी के पास 'कोई ठोस सिस्टम नहीं', इसलिए घुटन भरी जिंदगी जी रहे हैं। अगर हम सब मतभेद को भुलाकर एक होकर काम करें, तो हम दुनिया के सभी देशों को 'आधुनिक खेती और गलत उपचार से छुटकारा दिला सकते हैं। हम बिना किसी 'लालच और पुरस्कार' के सभी को मदद करने, श्री सावे ने जो OFS खोजी है, मगर देशद्रोहियों ने जिसे दबाकर रखी है, उसे चाहे तो वैज्ञानिक सबूत के साथ, सभी को 'आत्मनिर्भर' बनाने, नई पीढ़ी को गुलामी से बचाने, सभी 'संयुक्त परिवार में खुशी से अपना जीवन बसर कर सकें, इसलिए चाहे तो 'पावर प्वाइंट' के माध्यम से 'प्राकृतिक चक्र के सभी रहस्यों' को उजागर करेंगे ताकि सभी को 'निरोगी जीवन, सुख और समृद्धि का मार्ग मिल सके।' हम सभी को 'करोड़पति' बनाने के साथ-साथ 'प्राकृतिक नमक की 2 गोली' द्वारा '15 दिनों में सभी बीमारी से राहत दिलाने में सफल रहें हैं।' वह सारी जानकारी 'प्राकृतिक गोली विभाग में पढ़े और जैविक कृषि की उपज खाकर निरोगी जीवन पाएं।

हम 'सावे और संघवी' सभी को विनम्र निवेदन करते हैं कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, 'जागो भाई जागो', हमें 'प्रकृति की ओर लौट जाना चाहिए और अपना सिर प्रकृति चक्र सिस्टम की गोद में रख देना चाहिए।' हमारे श्री सावे बार-बार कहते थे, 'मैं 'आधुनिक सिस्टम' का विरोध नहीं करता, असल में वह जीवन जीने में बहुत उपयोगी है, लेकिन याद रखें कि जब आप 'आध्यात्मिक विज्ञान का ज्ञान और आधुनिक विज्ञान को मिलाकर काम करेंगे तो हम जीवन में प्रगति कर सकते हैं, केवल आधुनिक विज्ञान, इस सुंदर पृथ्वी को नष्ट कर देगी जो हो रही है और हमारी आँखों के सामने वह हो रहा है।'



केवल सिंचाई और कुछ न करें तो, प्रकृति सब मुफ्त करती है।

घास पशुधन के लिए प्रकृति का वरदान है।



पशुधन दूध, खाद और फसल की दवा का कारखाना है।

1960 से श्री सावे और 1981 से मैं अशोक संघवी ने मिलकर, विश्व के सभी को आत्मनिर्भर बनाने कोशिश की, लेकिन लालच, लूट, ज्यादा पैसे कमाने की चाहत के सामने हम लाचार है। प्रचार में सरकार, पत्रकार और समाज का साथ नहीं मिला। अब खुद को बचाना हो, तो खुद ही जागृत होना होगा। भाई अब मैं 77 साल का हूँ और 2025 में OFS के बारे में जागरूकता लाने का यह मेरा आखिरी प्रयास है। मगर स्व. श्री सावे परिवार के श्री नरेश, सुरेश और अभिजय मेरे गुरुजी के मानव सेवा के काम करने अपने कल्पवृक्ष पर मुफ्त जानकारी दे रहे हैं और घर पर रखकर 20 लोगों को OFS का शिक्षा दे रहे हैं। मैं अशोक संघवी भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि, सभी को निरोगी जीवन और खुशी दें।